अंक - 01

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका

प्रत्यूषा

अप्रैल-सितंबर 2024

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, हैदराबाद

स्रोत : transformingindia.gov.in

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं

संदेश

पत्रिका परिवार एवं संपादकीय

1. भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की उपलब्धियां : पारदर्शिता और जवाबदेही में अग्रणी 3

2. श्रीअन्न 7

3. बाल विवाह 9

4. कमरा 13

5. एक समय के बाद 15

6. भारत की जी 20 प्रेज़िडेन्सी : एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य 16

7. तीन दोस्तों की केरल की सैर 19

8. हिन्दी एक ख़ोज 21

9. मोतियों का शहर हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत और सौन्दर्य 23

10. भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था 29

11. संन्यास जीवन की नई शुरुआत : विशेष रूप से सेवानिवृत्ति के दिनों का महत्त्व 31

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं

12. तलाश 32

13. गाँधी तथा उनके बारे में भ्रांतियाँ 34

14. तमन्ना 36

15. संगीत की महारानी 37

16. भारत : शांति के पक्ष में 41

17. कार्यालयी परियोजनाओं में दिव्यांग लोगों के समावेशन की संभावनाएँ और चुनौतियाँ 45

18. स्वार्थ 49

अस्वीकरण

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के लिए स्वयं रचनाकार जिम्मेदार हैं, पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से पत्रिका परिवार का सहमत होना जरूरी नहीं है। इस प्रकाशन में प्रयोग किए गए सभी चित्रों और जानकारियों के स्रोत का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। ये सभी सिर्फ ज्ञान बढ़ाने के हित के लिए प्रयोग किए गए हैं। किसी भी न्यायिक वाद के लिए न्यायिक क्षेत्र हैदराबाद, तेलंगाना होगा।

संदेश

श्री एम. एस. सुब्रहमण्यम
महानिदेशक

> हमारे देश में हिन्दी भाषा का अत्यधिक महत्त्व है, न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत के रूप में, बल्कि उसकी आत्मनिर्भरता में भी।

इस कार्यालय की राजभाषा हिन्दी की गृह पत्रिका 'प्रत्यूषा' के पहले अंक को आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इसके लिए मैं कार्यालय के सभी रचनाकारों का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ कि उनकी रचनात्मकता के कारण ही इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है।

हमारे देश में हिन्दी भाषा का अत्यधिक महत्त्व है, न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत के रूप में, बल्कि उसकी आत्मनिर्भरता में भी। हिन्दी भाषा न केवल देशवासियों के बीच संवाद का माध्यम है, बल्कि यह हमारी भारतीय विचारधारा और समृद्ध साहित्य का भी प्रतीक है। राजभाषा को अपनाना एवं उसी में कार्यालयी कामकाज करना हमारा दायित्व है और उसकी उत्तरोतर प्रगति में अपना योगदान देना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसी क्रम में प्रत्यूषा हमारा एक विशेष प्रयास है।

हिन्दी भाषा को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमें उसके प्रयोग में नई और नवाचारी तकनीकों का सहयोग करना चाहिए। इसमें डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग और तकनीकी उन्नति के साथ हिन्दी के संवाद को बढ़ावा देना शामिल है। हम सभी का यह दायित्व है कि हम हिन्दी भाषा को अपनी उन्नति के एक माध्यम के रूप में देखें और इस प्रकार आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

एम. एस. सुब्रहमण्यम

संदेश

श्री आ. पार्वेंतन
निदेशक

यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष का अवसर है कि कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रत्यूषा' का पहला अंक आप के समक्ष प्रस्तुत है । इसके लिए मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं इसके प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

भाषा विचार की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और साहित्य समाज का दर्पण। इस पत्रिका में प्रकाशित कहानी, लेख, कविताएं आदि साहित्य के ही रूप हैं । पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं इस कार्यालय परिवार के सदस्यों के अनुभवों, विचारों एवं दर्शन का समागम है। पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य की पूर्ति करती है बल्कि रचनाकारों की छिपी हुई रचनात्मक प्रतिभा को उभारने का भी कार्य करती है। यह पत्रिका इन दोनों ही उद्देश्यों में सफल प्रतीत हो रही है।

पुन:श्च, मैं संपादक मंडल एवं कार्यालय परिवार के सभी सदस्यों को इसके सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

आ. पार्वेंतन

भाषा विचार की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और साहित्य समाज का दर्पण। इस पत्रिका में प्रकाशित कहानी, लेख, कविताएं आदि साहित्य के ही रूप हैं।

संदेश

राजभाषा हिंदी पत्रिका 'प्रत्यूषा' के पहले अंक को आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

महानिदेशक महोदय की विशेष रुचि के फलस्वरूप हम प्रत्यूषा के पहले अंक के प्रकाशन में गुणवत्ता रखने एवं हर कदम पर उनके कुशल मार्गदर्शन से विविध कठिनाइयों को हल करने में सफल हो पाए हैं। राजभाषा पत्रिका में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का उत्साहपूर्वक योगदान कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी रुचि को दर्शाता है ।

हमारी पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों से जुड़े लेख, कहानियों एवं कविताओं का संकलन है। साथ ही, पत्रिका में सबसे महत्त्वपूर्ण हमारे कार्यालय के सारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान अविश्वश्रीय एवं अत्यंत सराहनीय है जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन को सार्थक एवं सफल बनाने के लिए रोचक और ज्ञानवर्धक रचनाएँ दी जिसके फलस्वरूप हम इसे प्रकाशित कर रहे हैं।

आशान्वित हूँ कि यह अंक आप सबका ज्ञानवर्धन करेगा तथा सभी कार्यालयों के पाठकगण इस पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य देंगे जिससे हमें आगामी अंक को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

बिनायक मजूमदार

श्री बिनायक मजूमदार
उप निदेशक

"राजभाषा पत्रिका में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का उत्साहपूर्वक योगदान कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी रुचि को दर्शाता है ।"

प्रधान संपादक की कलम से

श्री के. मेहेर प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल। । "

भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी का यह विचार किसी भी देश अथवा क्षेत्र की मूल भाषा या प्रादेशिक भाषाओं की महत्ता को बहुत ही साधारण एवं सरल रूप से व्यक्त करता है कि बिना किसी अपनी भाषा के किसी भी देश की उन्नति को वो गति नहीं मिलती जो उसके जनता की क्षमता में होती है।

सभी देशों की भाषाओं की भांति ही हिन्दी हमारे देश की पहचान है और हिन्दी भारतीय समाज, संस्कृति एवं भारतीयों के जीवन मूल्यों की संवाहक एवं प्रेषक है। भारत विभिन्नताओं का देश है और भाषा के आधार पर भी हमारे यहाँ बहुत-सी विभिन्नताएं है। हिन्दी हमारे देश की अधिकतम जन-मानस द्वारा समझी और बोली जाने वाली भाषा है और इसी कारण आजादी के बाद अंग्रेजी की मानसिकता से आजाद करने के लिए हिन्दी को संघ के कार्यालयी उपयोग की भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई ।

सभी देशों की भाषाओं की भांति हिन्दी हमारे देश की पहचान है और हिन्दी भारतीय समाज, संस्कृति एवं भारतीयों के जीवन मूल्यों की संवाहक एवं प्रेषक है।

इसी संदर्भ में कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के उपयोग को बढ़ाने की दिशा में हिन्दी पत्रिका "प्रत्यूषा" का प्रकाशन किया गया है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के उपयोग को बढ़ाने की दिशा में यह पत्रिका काफी लाभदायक सिद्ध होगी।

मुझे उम्मीद है कि "प्रत्यूषा" के पहले अंक को आप सभी पाठकगण अवश्य पसंद करेंगे और अपने सुझाव हमसे साझा करेंगे ।

के मेहेर प्रसाद

प्रकाशक

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, हैदराबाद

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री एम. एस. सुब्रहमण्यम, महानिदेशक

परामर्शदाता

श्री आ. पावेंतन, निदेशक
श्री बिनायक मजूमदार, उप निदेशक

प्रधान संपादक

श्री के. मेहेर प्रसाद,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री एन. शिवा कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादन सहयोगी

1. श्री राहुल कुमार,
   वरिष्ठ अनुवादक
2. सुश्री सिम्मी साव,
   कनिष्ठ अनुवादक
3. श्री विवेक कुमार सिंह,
   कनिष्ठ अनुवादक
4. श्री शशि किशोर राम,
   कनिष्ठ अनुवादक

संपादक की कलम से

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रत्यूषा' के पहले अंक को सभी पाठकगण के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। महानिदेशक महोदय की प्रेरणा एवं निदेशक महोदय के मार्गदर्शन से हम इस पत्रिका के संपादन में सफल हो पाए हैं। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं के लिए सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों का साथ भी अपेक्षा से कहीं अधिक प्राप्त हुआ जिसके परिणामस्वरूप हम पत्रिका के रूप में विचारों एवं अनुभवों का सुंदर गुलदस्ता आपके सामने पेश कर पाए हैं ।

यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिंदी के बढ़ते उपयोग को दर्शाती है। साथ ही अधिकारियों और कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी में कुशलता का भी प्रतीक है। यह पत्रिका उनके लिए उत्साहवर्धन एवं प्रेरणा का स्रोत है। साथ ही साथ यह पत्रिका सभी रचनाकारों को अपनी प्रतिभा सबके समक्ष रखने का एक मंच प्रदान करती है। विगत वर्षों में इस कार्यालय की उपलब्धियों, उत्सवों एवं आयोजनों के चित्र भी इसमें समाहित किए गए हैं। पूरी कोशिश यह रही है कि यह पाठकों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ मनोरंजन का भी कार्य करे। सभी पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने पत्रों के माध्यम से अपने सुझाव के रूप में अपनी प्रतिक्रिया भेजकर संपादक मंडल एवं रचनाकारों का उत्साहवर्धन करें। आपका यह सहयोग हमें भविष्य में पत्रिका के अगले अंक को और बेहतर करने में सक्षम बनाएगा।

अंत में, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग के लिए सभी वरिष्ठ अधिकारियों, रचनाकारों एवं सहयोगी साथियों को धन्यवाद देता हूँ जिनके बिना इस पत्रिका के प्रकाशन की यात्रा संभव नहीं थी। आशा है कि 'प्रत्यूषा' के इस अंक को पाठक पसंद करेंगे।

शिवा कुमार

श्री एन. शिवा कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लेख

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (कैग) की उपलब्धियां: पारदर्शिता और जवाबदेही में अग्रणी

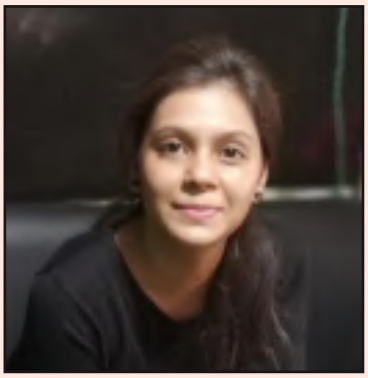

श्रीमती दीपा माहेश्वरी
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी), एक महत्त्वपूर्ण संवैधानिक निकाय, ने देश के शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने की दिशा में अथक प्रयास किए हैं। वर्षों से कैग की उपलब्धियों ने सार्वजनिक धन के कुशल और प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है एवं सरकार को उसके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया है। आइए, हम सीएजी की स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक इसकी उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हैं।

1. वित्तीय अनियमितताओं को उजागर करना : कैग की प्राथमिक जिम्मेदारियों में से एक विभिन्न सरकारी विभागों और संगठनों का वित्तीय अंकेक्षण करना है। अपने पूरे अस्तित्व में, कैग वित्तीय अनियमितताओं के कई उदाहरणों को प्रकाश में लाने में सफल रहा है, जिसमें धन का दुरुपयोग, भ्रष्टाचार और

वर्षों से कैग की उपलब्धियों ने सार्वजनिक धन के कुशल और प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, एवं सरकार को उसके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया है।

सार्वजनिक खर्च में अक्षमता शामिल है। इन खुलासों ने जांच, बरामदगी और, कुछ उदाहरणों में, भविष्य की घटनाओं को रोकने के लिए नीतिगत परिवर्तनों को जन्म दिया है।

2. सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना : कैग के निष्पादन लेखापरीक्षा में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन योजनाओं जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इन योजनाओं के कार्यान्वयन और प्रभावशीलता की समीक्षा करके कैग ने बाधाओं की पहचान करने, आवश्यक सुधारों का प्रस्ताव करने और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के समग्र वितरण में सुधार करने में मदद की है। इसके परिणामस्वरूप पारदर्शिता बढ़ी है और जवाबदेही बढ़ी है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि लक्षित लाभार्थियों तक इच्छित लाभ पहुंचे।

3. आर्थिक शासन को बढ़ाना : कैग की रिपोर्ट ने नियामक निकायों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के काम-काज का आकलन और मूल्यांकन करके आर्थिक शासन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। इन संस्थाओं के वित्तीय प्रबंधन और परिचालन दक्षता की जांच करके सीएजी ने सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और सुधारात्मक उपायों की सिफारिश करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे न केवल लागत में बचत हुई है, बल्कि इन संगठनों के समग्र प्रदर्शन में भी सुधार हुआ है जिससे अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

4. सरकारी राजस्व और कराधान की लेखापरीक्षा : कैग करों, शुल्कों और शुल्कों सहित सरकारी राजस्व के उचित संग्रह और आवंटन का पता लगाने के लिए राजस्व ऑडिट करता है। कानूनी प्रावधानों और विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करके कैग राजस्व रिसाव, कर चोरी और धोखाधड़ी जैसी प्रथाओं को रोकने में मदद करता है। अपने कठोर आकलन के माध्यम से सीएजी ने राजस्व सृजन के वृद्धि में योगदान दिया है और लोक कल्याण के लिए धन के उचित वितरण की सुविधा प्रदान की है।

5. वित्तीय निगरानी को मजबूत करना: कैग ने सरकारी विभागों और निकायों के खातों की लेखापरीक्षा और मूल्यांकन करके वित्तीय निरीक्षण तंत्र को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कैग वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन और सिफारिशें प्रदान करके, वित्तीय जांच और नियंत्रण प्रणालियों को बढ़ाता है, पारदर्शिता सुनिश्चित करता है और वित्तीय कुप्रबंधन को रोकता है। यह सरकार को सूचना के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाता है, जिससे वित्तीय कदाचार की किसी भी संभावना पर अंकुश लगाया जा सकता है।

निष्कर्षत: भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की उपलब्धियां सराहनीय हैं। अपने समर्पित प्रयासों के माध्यम से कैग ने पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन में नए मानदंड स्थापित किए हैं। नागरिकों को सही जानकारी से सशक्त बनाकर, अनियमितताओं को उजागर करके और सुधारों की सिफारिश करके कैग ने सरकार को जवाबदेह ठहराते हुए सार्वजनिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उत्कृष्टता की इसकी निरंतर खोज निस्संदेह भारत में एक अधिक पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन बनाने में मदद करेगी।

हैदराबाद में ऑडिट सप्ताह 2023 की कुछ झलकियां

दिनांक 20 नवंबर 2023 को डॉ. तमिलिसाई सौंदरराजन (तत्कालीन माननीया राज्यपाल, तेलंगाना) द्वारा ऑडिट सप्ताह 2023 का उद्घाटन

हैदराबाद में ऑडिट सप्ताह 2023 की कुछ झलकियां

19 नवंबर 2023 को आयोजित वॉकेथॉन कार्यक्रम में मुख्य अथिति के रूप में उपस्थित 19 वे एशियाई खेलों में 3000 मीटर स्टीपल चेज़ में कांस्य पदक विजेता सुश्री प्रीति लांबा

लेख

श्रीअन्न

श्रीमती पी. पद्मावती
व. निजी सचिव

वर्ष 2023 को खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज या पोषक अनाज वर्ष घोषित किया है।श्रीअन्न क्या होता है और इसे खाने के क्या-क्या फ़ायदे होते हैं, इस पर आगे चर्चा की गई है:

मोटे अनाज को श्रीअन्न अथवा मिलेट्स कहते हैं। यह 2 प्रकार के होते हैं। एक मोटा दाना (Major millets) और दूसरा छोटा दाना (Minor millets)। मोटा दाना में ज्वार (sorghum), बाजरा (pearl millet) और रागी (finger millet) शामिल है, जबकि छोटा दाना में कँगनी (foxtail), कुटकी (little millet), कोदो (kodo) और सामा (barnyard millet) आदि आते हैं।

स्रोत : transformingindia.gov.in

भारत में 60 के दशक में श्रीअन्न का उत्पादन कम हुआ और उसकी जगह भारतीयों की थाली में गेहूँ और चावल सजा दिए गए। 1960 के दशक में हरित क्रांति के नाम पर भारत के परंपरागत भोजन को हटा दिया गया। गेहूँ को बढ़ावा दिया गया जो एक प्रकार का मैदा ही है। मोटा अनाज खाना बंद कर देने से कई तरह के रोगों के साथ ही देश में कुपोषण भी बढ़ा है।

श्रीअन्न (मोटे अनाज) या मिलेट्स विशेष पोशक गुणों (प्रोटीन, आहार फ़ाइबर, सूक्ष्म पोशक तत्त्वों और एंटीआक्सिडेंटस्) से समृद्ध होते हैं। कैल्शियम, आयरन, जिंक, फॉस्फोरस, विटामिन-बी6, विटामिन-बी3 और कैरोटिन आदि तत्त्व भी इन अनाजों में पाए जाते हैं।

• मिलेट्स शरीर में स्थित अम्लता यानि एसिड को दूर करता है।

•मिलेट्स जीवनशैली की समस्याओं और स्वास्थ्य सम्बन्धी रोगों जैसे मोटापा, मधुमेह, दमा, थाइरॉइड आदि से बचाने में सक्षम है।

•मोटे अनाज की फसल को उगाने का फायदा यह है कि इसे ज्यादा पानी की ज़रुरत नहीं होती है। यह न तो पानी की कमी होने पर खराब होती है और न ही ज्यादा बारिश होने पर इसे नुकसान पहुंचता है। यह फसल खराब होने की स्थिति में भी पशुओं के चारे के काम आ सकती है। मोटे अनाज की फसलों में रसायनों और कीटनाशकों का प्रयोग करने की ज़रुरत भी नहीं है।

भारत में 60 के दशक में श्रीअन्न का उत्पादन कम हुआ और उसकी जगह भारतीयों की थाली में गेहूँ और चावल सजा दिए गए। 1960 के दशक में हरित क्रांति के नाम पर भारत के परंपरागत भोजन को हटा दिया गया।

कोरोना के बाद मोटे अनाज इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। इन्हें सुपर फ़ूड कहा जाने लगा है।

कई वर्षों तक भारत मोटे अनाजों का सर्वप्रमुख उत्पादक बना रहा था लेकिन हाल ही के वर्षों में अफ्रीका दुनिया में मोटे अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक है। मोटे अनाजों के उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 2007 में राष्ट्रीय मिलेट्स मिशन (NMM) लॉन्च किया गया।

अपने कार्यालय में हाल ही में समाप्त ऑडिट सप्ताह के अंतर्गत एन.एम.एम द्वारा स्थापित मिलेट्स स्टॉल को विशेष आदर मिला।

मोटे अनाजों की खेती के लिए मूल्य समर्थन योजना (PSS) द्वारा किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

सरकार ने मोटे अनाजों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) में शामिल किया है ताकि इसे आम लोगों के लिए सुलभ और सस्ता बनाया जा सके।

मोटे अनाजों के उत्पादन और उपभोग को बढ़ाने के लिए किसान तभी प्रेरित होंगे जब सरकार द्वारा उन्हें जैविक खेती (Organic Farming) के लिए समर्थन मिलेगा जिससे इस प्रकार की खेती को निश्चित रूप से लाभदायक बनाया जा सकेगा। अंततः मोटे अनाज आबादी के एक बड़े हिस्से को पोषण संबंधी लाभ प्रदान कर सकते हैं।

कार्यालय में ऑडिट सप्ताह के दौरान स्थापित मिलेट स्टॉल

लेख

बाल विवाह

श्री रोहित
लेखापरीक्षक

बाल विवाह से हम क्या समझ सकते हैं? बाल विवाह समाज के लिए क्या मायने रखता है ? हर समाज के जीवनयापन का एक तरीका होता है। वर्तमान समय में बाल विवाह को एक सामाजिक कुरीति के रूप में देखा जाता है। आसान शब्दों में बाल विवाह को समझा जाए तो किसी लड़के या लड़की की 15 साल की उम्र से पहले होने वाला विवाह बाल विवाह कहलाता है।

बाल विवाह एक ऐसी कुरीति है, जो भारत देश में सदियों से चली आ रही है। माना जाता है कि बाल विवाह की शुरूआत गुप्त काल से हुई थी। प्राचीन समय में लड़कियों को विदेशी शासकों से बलात्कार व अपहरण से बचाने के लिए बाल विवाह एक हथियार के रूप में प्रयोग किया गया था। लेकिन क्या यह हथियार सही साबित हुआ था? क्या इस कुरीति को हथियार का नाम देना सही था? इस सवाल का जवाब वर्तमान समय के अनुसार गलत ही ठहराया जाता है और गलत हो भी क्यों न, इसके कारण ना जाने कितने लड़कों व लड़कियों की जिंदगी खराब हुई है और भविष्य में भी होती रहेगी। बाल विवाह को समझने के लिए हम इसकी जितनी गहराई में जाएंगे उतने ही अधिक नकारात्मक परिणाम हमें देखने को मिलेंगे ।

बाल विवाह के कई कारण हो सकते हैं, जैसे - गरीब लड़कियों की शिक्षा का निम्न स्तर, लड़कियों को कम रुतबा देना, उन्हें आर्थिक बोझ समझना, सामाजिक प्रथाएं एवं परम्पराएं, शिक्षा की कमी, लैंगिक असमानता आदि । अनुमानित तौर पर भारत में प्रत्येक वर्ष, 18 साल से कम उम्र की करीब 15 लाख लड़कियों की शादी होती है। 15 साल से 19 साल की उम्र में लगभग 16% लड़कियों की शादी होती है जिसके कारण भारत में दुनिया की सबसे अधिक बाल-वधुओं की संख्या है जो विश्व की कुल संख्या का तीसरा भाग है। नैशनल हेल्थ फैमिली सर्वे (एनएफएचएस-5) के आंकड़ों के अनुसार पश्चिम बंगाल, बिहार और त्रिपुरा इस सूची में शीर्ष पर हैं। विशेष रूप से यह आंकड़ा ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक हो जाता है। इन आंकड़ों के अलावा भी पता नहीं कितने बाल विवाह किए जाते हैं। महिलाओं को बच्चे पैदा करने वाली मशीन समझा जाता है, इसलिए बुजुर्ग अपने परिवार को बढ़ाने के लिए छोटे-छोटे बच्चों की शादी करवा देते हैं, इस कारण से न जाने कितनी ही लड़कियों की मृत्यु हो जाती है। उनका भविष्य पल्लवित होने से पहले ही छीन लिया जाता है। बाल विवाह में बंधने वालों से अपेक्षा की जाती है कि लड़के वित्तीय भार को संभालेंगे, तो लड़कियां घर-परिवार की देखभाल करेंगी, इससे इनका बचपन छीन लिया जाता है।

भारत के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बाल-विवाह को राकने के लिए अनेकं कदम उठाए गए हैं। यूनिसेफ का मानना है कि 2030 तक सम्पूर्ण विश्व में बाल विवाह होने समाप्त हो जाएंगे। भारत सरकार व विभिन्न राज्यों की सरकारें भी बाल-विवाह को रोकने के लिए अनेक अधिनियमों को लागू

करती है। जैसे- बाल विवाह निरोधक अधिनियम 1929, बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006, बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक 2021, प्रयोज्यता (मुस्लिम समाज के लिए) तथा अनेक संस्थाएं भी बाल विवाह को रोकने के लिए काम कर रही हैं । भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा अनेक कार्यक्रमों का भी संचालन किया जा रहा है जो बाल विवाह को रोकने में मददगार साबित हो रहे हैं।

बाल-विवाह एक कुरीति के साथ-साथ अनेक दुष्परिणामों को अपने साथ लेकर आती है जैसे- प्रांरभिक मातृ-मृत्यु ,शिशु स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता के परिणाम, हिंसा, शिक्षा का अभाव आदि।

सदियों से चली आ रही इस कुरीति को आज तक समाप्त नहीं किया जा सका। बाल-विवाह मासूमों की जिंदगी के साथ-साथ समाज को भी खोखला कर रहा है। समाज में बेटियों को पराया धन माना जाता है। बेटियों का कन्यादान करने से माता-पिता अपने सभी कर्मों से मुक्त हो जाते हैं । इस मानसिकता को बदलने का समय नहीं आ गया है क्या? समाज अपनी बेटियों को बोझ समझना बंद नहीं कर सकता है क्या? इन सवालों का जवाब शायद आज तक कोई ढूंढ नहीं पाया है। बाल विवाह केवल एकमात्र कुरीति नहीं है। न जाने इस कुरीति में कितनी और कुरीतियां छिपी हुई बैठी हैं। हर रोज किसी लड़की के सपनों का गला घोटा जाता है। बाल विवाह के नाम पर किसी लड़के का बचपन छीना जाता है।

क्या हम बाल विवाह को जड़ से खत्म कर सकते हैं? क्या हम बाल-विवाह से होने वाले खतरों से निपट सकते हैं? क्या हमारी सुधार की गई नीतियों का लाभ समाज को प्राप्त होगा या ये नीतियां केवल कागजों पर ही रह जाएंगी? क्या हम समाज में बदलाव ला सकते हैं? क्या हम लोगों की सोच को बदल सकते हैं?

इन सवालों का जवाब पाने के लिए ये सवाल समाज के सभी लोगों को स्वयं से करना चाहिए। आधुनिकता इंसान के रहन-सहन, कपड़ों, डिग्रियों से नहीं देखी जानी चाहिए। उनकी आधुनिकता उनके सोच से आंकी जानी चाहिए। आज का युवा बाल-विवाह जैसी कितनी कुरीतियों को समाप्त कर सकता है। बाल विवाह को समाप्त करने के लिए हमें अपने स्वयं के घर, समाज, मोहल्ले से शुरूआत करनी चाहिए। हमें यह समझना पड़ेगा कि बाल विवाह से कितने मासूमों की जिंदगी से खिलवाड़ किया जाता है। केवल एक इंसान ही समाज की सोच नहीं बदल सकता है। एक साथ अनेकों को साथ आना पड़ेगा। प्राचीन समय से ही कहावत प्रचलित है कि "बच्चे भगवान का रूप होते हैं"। तो बाल-विवाह के नाम पर बच्चों की मासूमियत नहीं छिननी चाहिए।

इस मुद्दे पर समय-समय पर अनेकों वाद-विवाद हुए हैं। फिर इन वाद-विवादों को भुला दिया जाता है। इसी प्रकार मेरी इन सब बातों को भी भुला दिया जाएगा। लेकिन खुद से सवाल करना कि क्या हम समाज में बदलाव लाने का प्रयास कर सकते हैं, अगर जवाब हां में मिले तो एक छोटा-सा प्रयास हम सब करेंगे। क्या पता हम किसी मासूम की जिंदगी बचा दें।

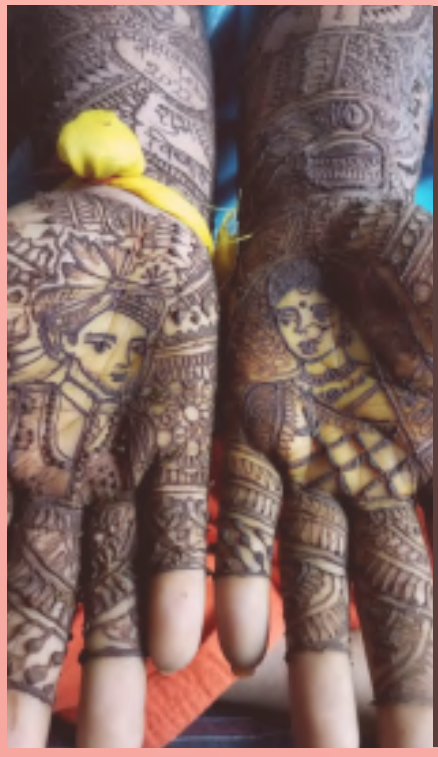

बाल विवाह निषेध अधिनियम (पीसीएमए), 2006 के अधिनियमन के बाद से बाल विवाह का प्रचलन 2006 में 47% से घटकर 2019-21 के दौरान 23.3% हो गया है (एनएफएचएस-5)।

हैदराबाद में ऑडिट सप्ताह 2023 की कुछ झलकियां

स्कूली बच्चों में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यों, भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु पिकेट एवं गोलकोंडा स्थित केन्द्रीय विद्यालयों एवं रंगा रेड्डी स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया

हैदराबाद में ऑडिट सप्ताह 2023 की कुछ झलकियां

महानिदेशक महोदय के करकमलों से वर्ष 2020-23 के दौरान सराहनीय कार्य करने हेतु योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री के. वी. रंगाराव, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (व.लेप.अ.)

वर्ष 2020-23 के दौरान सराहनीय कार्य करने हेतु योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री जी. हेमानंद सागर, व.लेप.अ.

वर्ष 2020-23 के दौरान सराहनीय कार्य करने हेतु योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री ए. सत्यनारायणा, व.लेप.अ.

शतरंज टूर्नामेंट की विजेता श्रीमती एम. आशा किरण , व.लेप.अ.

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत श्री एम. मधुकर, सहायक पर्यवेक्षक

कविता

कमरा

सुश्री सिम्मी साव
क. अनुवादक

यहाँ बिखरे हुए अंधेरे में
उम्मीदों का ढेर पड़ा है,
मेरे सिरहाने के नीचे
सपनों का संदूक पड़ा है।
इस चार कदम के कमरे में
मीलों तक फैला अंधेरा है,
कदम ना नीचे रख पाऊँ
यहाँ गर्त भी इतना गहरा है।
झरोखे से आती रोशनी को
अपनी सारी व्यथा मैं कहती हूँ,
इस चारदीवारी की कोठरी में
कितनी घुटन मैं सहती हूँ।

हिन्दी पखवाड़ा 2023 की कुछ झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित शब्द पहेली प्रतियोगिता में मार्गदर्शन करते हुए श्री के. मेहेर प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित हिन्दी पठन प्रतियोगिता का संचालन करते श्री जी. चंद्रशेखर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता की एक झलक

कविता

एक समय के बाद

श्री शशि किशोर राम
क. अनुवादक

एक समय के बाद
ये पाँव थक जाएंगे
दौड़ती भागती ज़िंदगी में
दो कदम भी न चल पाएंगे
इच्छाएँ रह जाएंगी यूं ही
आँसू छलकेंगे आँखों से
समय से विश्वास उठेगा
समय से ही बंध जाएंगे

एक समय के बाद
न कुछ सोच पाएंगे
प्यार, मोहब्बत, रिश्तों की भावनाएं
भी न समझ पाएंगे
ज़िंदगी जीने और सब कुछ पाने की
जद्दोजहद करने वाली
मस्तिष्क की तंत्रिकाएं
उलझ जाएंगे

स्वयं से बात करेंगे
और स्वयं को न पहचान पाएंगे
विश्वास उठेगा स्वयं से ही
क्या थे और क्या रह गये हैं
जिंदगी को जीने वाले
जिंदगी से ही बिछड़ गये हैं
यादें भी साथ न देगी,
सब कुछ कहीं धुंध में खो जाएंगे
उस कठिन समय में कैसे जी पाएंगे

एक समय के बाद
यह नींद भी न आएगी
याद करेंगे कुछ न कुछ,
पर कुछ याद न आाएगी
दिन रात बोझिल होंगे
और जंग होगी ज़िन्दगी से
बिन यादों के बिन बातों के
कैसे हम जी पाएंगे

लेकिन सच यही है कि यह समय आएगा
सब कुछ छीन कर हमसे,
दूर हमे कहीं ले जाएगा
दूर हमें कहीं ले जाएगा
दूर हमें कहीं ले जाएगा...

लेख

भारत की जी 20 प्रेज़िडेन्सी : एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य

श्री पी. इंद्रा तेजा
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत ने जी 20 की प्रेज़िडेन्सी संभालकर वैश्विक आर्थिक समीक्षा और संवाद में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जी 20 एक ऐसा गुट है जिसमें दुनिया के 19 देशों के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों को शामिल किया गया है, जो आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर साझा दृष्टिकोण और समझदारी का संवाद करते हैं।

भारत के लिए जी-20 प्रेज़िडेन्सी एक महत्त्वपूर्ण क्षण है, जो देश को वैश्विक मंच पर एक मजबूत और सकारात्मक भूमिका में स्थापित करता है। इस प्रेज़िडेन्सी के दौरान भारत ने विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर नेतृत्व किया है, जैसे कि आर्थिक विकास, स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और वित्तीय समर्थन आदि।

भारत की इस प्रेज़िडेन्सी का मुख्य उद्देश्य वैश्विक अर्थव्यवस्था को सुरक्षित और समृद्ध बनाए रखना है, साथ ही सभी देशों के बीच सामरिक साझेदारी बढ़ाना है। भारत ने इस मुद्दे पर महत्त्वपूर्ण चर्चा की हैं और समझौते करने का प्रयास किया है, ताकि समृद्धि की राहों में रुकावटें कम हो और सहयोग बढ़े।

इस प्रेज़िडेन्सी के दौरान, भारत ने अपनी संवैधानिक और सांस्कृतिक धरोहर को भी बढ़ावा दिया है, जिससे विश्वभर में भारतीय विचारधारा को समझने में मदद मिलेगी। यहां तक कि भारत ने विशेष रूप से युवा पीढ़ी को संबोधित किया है और उन्हें आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में मार्गदर्शन किया है।

भारत की जी-20 प्रेज़िडेन्सी ने दिखाया है कि भारत एक सकारात्मक रूप से वैश्विक समुदाय के साथ सहयोग करने के लिए समर्थ है और यह सभी देशों के लिए भी एक उदाहरण है। यह एक अवसर है जिसका सही उपयोग करके हम एक समृद्ध और सहयोगपूर्ण भविष्य बना सकते हैं।

हैदराबाद में ऑडिट सप्ताह 2023 की कुछ झलकियां

अपोलो स्पेक्ट्रा अस्पताल के सहयोग से 22 नवंबर 2023 को आयोजित स्वास्थ्य शिविर में स्वास्थ्य जांच कराते हुए महानिदेशक महोदय

तेलंगाना सरकार के समन्वय से 22 नवंबर 2023 को आयोजित रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान करते हुए निदेशक महोदय

हैदराबाद में ऑडिट सप्ताह 2023 की कुछ झलकियां

आउटरीच कार्यक्रम के दौरान विद्यालयों में आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया गया

लेखापरीक्षा सप्ताह समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विजेताओं को सम्मानित किया गया

यात्रा वृत्तान्त

तीन दोस्तों की केरल की सैर

श्री जी. चंद्रशेखर
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

हैदराबाद के निवासी तीन लड़के – श्रीकांत, वेणु, और शेखर केरल के गुरूवायुर में स्थित श्रीकृष्ण भगवान का दर्शन करने के लिए शबरी एक्सप्रेस से रवाना हुए। उनकी यह यात्रा अपने शहर से बाहर की पहली यात्रा थी और वे बहुत खुश और उत्साहित थे। गुरूवायुर पहुँचने के लिए त्रिस्सुर तक का रेल सफर उनके लिए एक अच्छा अनुभव था। त्रिस्सुर रेलवे स्टेशन पर उतरकर वे बस में सवारी कर गुरूवायुर पहुँचे। उधर होटल में कमरा लेकर, वहां अपना सामान रखकर, स्नान कर, श्रीकृष्ण भगवान के दर्शन किए। उसके बाद होटल लौट कर भोजन कर विश्राम किए। फिर अगले दिन एक और स्वामी का दर्शन करके कन्याकुमारी जाने का निश्चय किए। होटल से चेकआउट करके रेलवे स्टेशन की तरफ निकल पड़े।

गुरूवायुर रेलवे स्टेशन पहुँच कर रेल का समय पता किया । रेल का समय शाम 08.00 बजे का है; यह जानकर क्लॉक रूम में अपना सामान जमा कर, भोजन करने के लिए वह स्टेशन के बाहर निकल पड़े। बातों-बातों में, कुछ समय तक चलने के बाद, 'होटल देवरागम्' नाम के होटल में प्रवेश किए। उन्हें वह होटल अच्छा और पारंपरिक लगा। होटल में पहुँचते ही उनका स्वागत किया गया और उनसे खाने का ऑर्डर लेने के लिए एक लड़का आया। उन्होनें उस लड़के से उसका नाम पूछा और परिचय कर लिया । बातों-बातों में उन्हें पता चला

...कि इतने में लड़का दौड़कर एक और बर्तन में खाना लेकर आया। इसे देख अंचभित तीनों ने कहा कि हमने तो और आर्डर नहीं दिया है, शायद यह किसी और का है। उतने में ही लड़के ने कहा कि सर पूरे होटल में आप अकेले कस्टमर हैं और यह आप ही का है...

कि वह लड़का हैदराबाद का ही है और 'होटल मैनेजमेंट' के पढ़ाई के अंतर्गत प्रशिक्षण के लिए गुरूवायुर आया है। फिर तीनों दोस्तों ने पहले 'सूप' ओर 'वेज प्लैटर' का आर्डर किया। लड़के ने थोड़ा धीरे से बोला कि "सर, आप आज शाम के पहले कस्टमर हैं, थोड़ा देर लगेगा लेकिन खाना स्वादिष्ट होगा"। उन्होनें कहा कि "कोई बात नहीं खाना गरमागरम और स्वादिष्ट रहे।" लड़का "जरूर सर" कहकर किचन में चला गया।

'सूप' और 'वेज प्लैटर' का इंतजार करते हुए, तीनों लड़के बाते करने लगे। समय बीतता गया और ऑर्डर लेने वाला लड़का आया तो लगा कि खाना आया है। लेकिन वह लड़का सलाद का प्लैट लेकर आया था। थोड़े समय के बाद लड़का 'सूप' लेकर आया और थोड़े ही समय में 'वेज प्लैटर' लेकर आने का आश्वासन दिया और किचन में चला गया। बहुत समय बीतने के बाद भी लड़के की कोई खबर नहीं थी। आखिर में जब लड़का वेज प्लैटर लेकर आया, तो उसे जोर से डांटने का मन किया पर तीनों ने संयम बरता और बाकी खाने का एक साथ ऑर्डर करने का निश्चय कर 'रोटी-नान, दो सब्जियां, दाल-चावल और दही-चावल (कर्ड राइस)' का ऑर्डर कर दिए ताकि सभी समय पर टेबल पर आ जाए। ऑर्डर लेकर लड़का किचन में चला गया और बहुत समय के बाद खाना लेकर आया। लड़का बोला कि "पूरा खाना लेकर आया हूँ और कहा की कर्ड राइस अंत में लेकर आउँगा।" सही है समझकर, लड़के को खाना परोसने के लिए कहा और खाने का मजा लेने लगे तीनों दोस्त।

तीनों खाना खाते हुए बातों में उलझ गए और आराम से खाने का मजा लेने लगे। समय का अंदाजा नहीं रहा और अचानक से घड़ी को देखकर हैरान हो गए। ट्रेन का समय हो रहा था। तुरंत उन्होनें लड़के को जोर से पुकारा और कर्ड राइस जल्दी से लेकर आने के लिए कहा। लड़का सुन तुरंत जल्दी से उनके टेबल पर बाउल लगाकर तुरंत किचन की ओर निकल गया। समय के अभाव के कारण, तीनों ने स्वयं बाउल से खाना परोस लिए। उन्हें वह खाना थोड़ा स्पिाइसी पर स्वादिष्ट लगा। उन्हें वह बहुत पसंद आया और जमकर खाया और पूरा खत्म कर लिए। अब वह खाना खत्म कर फिंगर बाउल का इंतजार कर रहे थे कि इतने में लड़का दौड़कर एक और बर्तन में खाना लेकर आया। इसे देख अंचभित तीनों ने कहा कि हमने तो और आर्डर नहीं दिया है, शायद यह किसी और का है। उतने में ही लड़के ने कहा कि सर पूरे होटल में आप अकेले कस्टमर हैं और यह आप ही का है। फिर उन्होनें लड़के से पूछा कि यह खाना क्या है। लड़के ने उत्तर देते हुए कहा कि यह कर्ड राइस है। अचंभित होकर तीनों दोस्तों ने पूछा कि अगर यह कर्ड राइस है तो जो पहले बाउल में लगाया, वह क्या था, तो लड़के ने मन ही मन में हँसते हुए कहा कि वह रायता था और वह कर्ड राइस अब लाया है।

आश्चर्य से तीनों लड़के अपने में एक दूसरे का चेहरे देखकर, जोर-जोर से हँस पड़े और वह लड़का भी उनको देखकर मुस्कुराने लगा। फिर समय होता देखकर वह बिल का भुगतान कर गुरूवायुर रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हुए। गाड़ी में चढ़ने के बाद तीनों दोस्त इस किस्से को याद कर हँसने लगे। बाद में यात्रा पूरी करके घर लौट आए।

वे दोस्त जब कभी भी बाहर घूमने के लिए योजना बनाते हैं तो होटल देवारागम् के किस्से को याद कर हँस-हँस के थक जाते हैं ।

लेख

हिन्दी एक खोज

श्री अजीत कुमार झा
लेखापरीक्षक

हिंदी का उद्भव संस्कृत से हुआ है। हिंदी शब्द का संबंध मूल रुप से हिन्द अथवा हिन्दू शब्दों से है। इतिहासकारों के अनुसार यह द्रविड भाषाओं का सिंध है जो आर्यों के आगमन के पश्चात् संस्कृतिकरण की प्रवृति के कारण सिन्धु हो गया

हिंदी दिवस भारतीय इतिहास में एक और गौरवशाली दिन होते हुए भी आज हिंदी की ख़ोज क्यों? बस यही प्रश्न दिमाग में गूंजता है। शायद हिंदी को देखना और जानना दोनों ही आवश्यकता बन गई हैं ।

हिंदी के महत्त्व को जानने के लिए इसकी पृष्ठभूमि की ओर देखना चाहिए। यह कैसी भाषा है, इसकी उत्पत्ति कैसे हुई या फिर कुछ और ..... ये सारी चीजें काफी शोध का विषय रही हैं और अलग - अलग इतिहासकारों ने अलग-अलग मत दिए हैं। हिंदी का उद्भव संस्कृत से हुआ है। हिंदी का संबंध मूल रूप से हिन्द अथवा हिन्दू शब्द से है। इतिहासकारों के अनुसार यह द्रविड़ भाषाओं का सिंध है जो आर्यों के आगमन के पश्चात संस्कृतिकरण की प्रवृत्ति के कारण सिन्धु हो गया है। भारत के ईरान से प्राचीन व्यापारिक संबंध और ईरानियों का सिन्धु का उच्चारण हिन्दू के रूप में करना भी इसका एक कारण माना जाता है। धीरे-धीरे ईरानी व्यापारी, सिन्धु नदी के आस-पास के क्षेत्रों और उनसे सटे हुए जितने भी भू-भाग से परिचित हुए वे सारे हिन्दू हो गए और इस तरह आज का समस्त भारत ही हिन्दुस्तान हो गया। परन्तु हिंदी का भाषायी विकास किस प्रकार हुआ या फिर कब हुआ यह कहना बहुत ही कठिन कार्य है इसलिए इसकी खोज को यहां पर विराम देना उचित होगा।

हिंदी का विकास जिस तेजी से हुआ, उसमें अन्य कई भाषाओं (देश के अन्य हिस्सों के, और विदेशी) का मिलना भी तय था और यही कारण है कि भाषायी तौर पर हिन्दी अन्य भाषाओं की तुलना में ज्यादा व्यापक, परिपक्व और संपन्न भाषा बन पाई। उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित शब्द हैं जो हिन्दी भाषा में इस तरह से घुल-मिल गए कि आज की युवा पीढ़ी उन्हें वास्तव में मूल रूप से हिंदी भाषा के ही शब्द समझते हैं जैसे कैंची, चाकू, किताब, बादशाह, फ़ौज, मालिक, लाख इत्यादि शब्द अरबी/फारसी के हैं और स्कूल, बोतल, रेडियो, हॉस्पिटल, डॉक्टर इत्यादि शब्द अंग्रेजी/यूरोपीय भाषा के शब्द हैं।

इस तरह से कई शब्द हैं जो हिंदी में रच बस गए और हिंदी को आम बोलचाल की भाषा बना दिया। परन्तु क्या सिर्फ यही कारण था कि हिंदी इतनी लोकप्रिय बन पाई। यह जानने के लिए इसकी कुछ विधाओं को भी जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अन्य भाषाओं की तरह हिंदी भाषा की भी दो मुख्य विधाएं हैं - गद्य और पद्य। विश्व के अन्य साहित्यों की तरह यहां भी साहित्य की रचना पद्य यानि कविता या श्रव्यात्मक छन्दों में होती थी। परन्तु क्यों.... गद्य क्यों नहीं? इसका कारण यह था कि शुरूआती दौर में, मुद्रण यानि प्रिंटिंग और कागज की सुविधा न होने के कारण, अधिकांश ज्ञान (वैदिक, वैज्ञानिक या सामाजिक) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करने का एक ही तरीका था - ऐसी रचना जिसे लय में गाया जा सके और उसे रुचि के साथ सुनकर याद करके ज्ञान को हस्तांतरित किया जा सके। आधुनिक काल में गद्य और पद्य दोनों समान रूप से लिखे जाने लगे हैं। इसका प्रमुख कारण भारत में अंग्रेजों का आगमन था - जिनकी वजह से मुद्रण, यातायात और संचार साधन की सुविधाएं बढ़ीं । समाचार पत्रों के प्रकाशन से खड़ी बोली का विकास और भी तेजी से हुआ।

हिंदी का आधुनिक काल में प्रवेश 1857 ई० के स्वतंत्रता संग्राम के बाद हुआ। इसके पूर्व, हिंदी एक बोलचाल की भाषा थी जो मुगलों के आगमन के पश्चात् फारसी से मिलकर, उर्दू के रूप में विकसित हुई और पश्चिम से लेकर पूर्व तक फैली। इसी प्रकार दक्षिण भारत में खड़ी बोली का एक रूप 'दक्खिनी हिंदी' विकसित हुआ।

अंग्रेजों के भारत में आने से अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के बाद समाज सुधारकों का दौर आया और इस तरह से समाज में पुनर्जागरण का काल आया और यहां के हिंदी साहित्यकारों को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण मिला। इस युग में एक ऐसा नाम आया जिसने हिंदी साहित्य को विस्तृत और विख्यात बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वह नाम था - भारतेन्दु हरिश्चंद्र। यह युग भारतेंदु युग कहलाया। भारतेंदु हरिश्चंद्र के आने से पूर्व हिंदी का विकास संस्कृत और उर्दू दोनों को साथ लेकर हो रहा था परन्तु इनके आने से हिंदी का प्रचार-प्रसार दोनों को मिलाकर हुआ। उन्होंने हिंदी भाषा को ज्यादा सशक्त और सजीव बनाने के लिए कहावतों, मुहावरों और लोकोक्तियों पर जोर दिया और इस प्रकार हिंदी भाषा ज्यादा व्यावहारिक और दमदार बन गई। सन् 1857 से लेकर 1900 ई० तक भारतेंदु युग में हिंदी भाषा खड़ी बोली हिंदी के रूप में काफी फली-फूली और एक विकसित भाषा बन पाई।

उपन्यास - गद्य विधा का एक अन्य रुप। यह शब्द 'उप' और 'नियास' से मिलकर बना है। प्रारंभ में उपन्यास में मानव जीवन के किसी एक भाग को चित्रित कर, उसे कथा / नाटक के रुप में लिखा जाता था।

लेकिन जब पश्चिमी देशों में उपन्यास का दौर शुरू हुआ, तो भारत इससे अछूता कैसे रहता? पश्चिमी देशों के उपन्यासों के भारत में आने के बाद भारत में उपन्यास का आधुनिक रूप उभरा।

उपन्यास - गद्य विधा का एक अन्य रूप। यह शब्द 'उप' और 'नियास' से मिलकर बना है। प्रारंभ में उपन्यास में मानव जीवन के किसी एक भाग को चित्रित कर, उसे कथा / नाटक के रूप में लिखा जाता था।

भारत में शुरू के कुछ उपन्यास बंगाली और मराठी में लिखे गए थे। परन्तु भारतीय 'प्रेम उपन्यास' की ओर तब गए जब देवकीनंदन खत्री ने तिलस्मी उपन्यास 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' लिखी।

ऐसा कहा जाता है कि ये उपन्यास इस तरह मशहूर हुए कि दक्षिण भारत में इन उपन्यासों को पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी को सीखना शुरू कर दिया, ठीक उसी प्रकार जिस तरह आज के दौर में बच्चे अंग्रेजी सीख रहे थे सिर्फ - 'हैरी पॉटर' को पढ़ने के लिए।

लेख

मोतियों का शहर हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत और सौन्दर्य

श्री जी. एम. एम. चिश्ती
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

हैदराबाद समृद्ध इतिहास, जीवंत संस्कृति और आधुनिकता का एक आकर्षक मिश्रण है, जिसे "मोतियों का शहर" के नाम से भी जाना जाता है। अपने प्रतिष्ठित स्मारकों से लेकर अपने स्वादिष्ट व्यंजनों तक यह शहर हर पल अपने जीवंत रंगों से पर्यटकों के साथ-साथ यहां के निवासियों को भी समान रूप से आकर्षित करता है। इस निबंध में हैदराबाद की समृद्ध विरासत और प्रतिष्ठित आकर्षण स्थलों का वर्णन है, जो यह दर्शाता है कि क्यों यह एक अद्वितीय और आकर्षक शहर है।

चारमीनार

तेलंगाना सातवाहन सहित काकतीय वंश, दिल्ली सल्तनत, बहमनी सल्तनत, क़ुतुब शाही राजवंश, मुगल साम्राज्य और आसफ़ जाही राजवंश (जिसे 'हैदराबाद के निज़ाम' भी कहा जाता है) जैसे कई शासकों द्वारा शासित था। इसकी सांस्कृतिक विरासत को इसके अतीत में तलाशा जा सकता है, जिसमें विविध राजवंशों और समुदायों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

हैदराबाद की स्थापना क़ुतुब शाही वंश के पांचवें शासक मुहम्मद कुली क़ुतुब शाह ने 1591 में की थी। विशेषकर हिन्दू काकतीय वंश, मुस्लिम क़ुतुब शाही और आसफ़ जाही राजवंश के शासन के दौरान यह क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप में कला, संस्कृति और शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा। कला और संस्कृति में शासकों की रुचि ने तेलंगाना को एक अद्वितीय बहु-सांस्कृतिक क्षेत्र में बदल दिया जहां विविध संस्कृतियां एक साथ मिलती हैं। इस युग में निर्मित चारमीनार और गोलकोंडा किला जैसे स्थापत्य कलाकृतियाँ हैदराबाद के गौरवशाली अतीत के प्रतीक हैं।

आज जिस तेलंगाना का नाम लिया जाता है वह कभी हैदराबाद और मराठवाड़ा का हिस्सा था, जिसका 17 सितंबर 1948 को भारत संघ में विलय हो गया। आंध्र प्रदेश से अलग कर एक नया राज्य बनाने की बहुत सालों की कोशिशों और आंदोलन के बाद 02 जून 2014 को तेलंगाना राज्य स्थापित हुआ। वर्तमान हैदराबाद इसी तेलंगाना की

राजधानी है। इस शहर में विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और जातीय पृष्ठभूमि के लोग रहते हैं, जिनमें से प्रत्येक ने इसके अद्वितीय संस्कृति के निर्माण में योगदान दिया है। मुगलों, फारसियों, तुर्कों और निज़ामों का प्रभाव इसकी वास्तुकला, भाषा, भोजन और रीति-रिवाजों में स्पष्ट है।

हैदराबाद का स्थापत्य परिदृश्य मुगल, फारसी और इंडो-इस्लामिक शैलियों का मिश्रण है, जो इसके शासकों की रुचि को दर्शाता है। चारमीनार, अपनी प्रतिष्ठित चार मीनारों के साथ हैदराबाद का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक और इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति है। अन्य उल्लेखनीय स्थलों में राजसी गोलकोंडा किला, भव्य चौमहल्ला पैलेस और आकर्षक कुतुब शाही मकबरे शामिल हैं और ये सब शहर की समृद्ध स्थापत्य विरासत की गवाही देते हैं।

आइये, अब हम हैदराबाद की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानों के बारे में चर्चा करते हैं -

ऐतिहासिक स्मारक:

1. चारमीनार : हैदराबाद के सर्वोत्कृष्ट प्रतीक के रूप में खड़ा, चारमीनार एक राजसी स्मारक है, जो 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बना है। 'चार' और 'मीनार' उर्दू शब्द हैं, जिसका अनुवाद "चार स्तंभ" है। यह मुसी नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। इसके पश्चिम में लाद बाज़ार स्थित है, और दक्षिण पश्चिम में ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित मक्का मस्जिद है। इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा तैयार आधिकारिक "स्मारकों की सूची" में एक पुरातात्विक और वास्तुशिल्प कला स्मारक चिह्न के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। ऐतिहासिक और धार्मिक रूप से महत्त्वपूर्ण यह संरचना आस-पास के लोकप्रिय और व्यस्त स्थानीय बाजारों के लिए भी जाना जाता है और हैदराबाद में सबसे अधिक आने वाले पर्यटक आकर्षणों में से एक बन गया है। इसके चार भव्य मेहराब और ऊंची मीनारें हलचल भरे पुराने शहर के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

2. गोलकोंडा किला : चट्टानी पहाड़ियों के बीच बसा गोलकोंडा किला, हैदराबाद के मध्ययुगीन

गोलकोंडा किला

अतीत की भव्यता का प्रमाण है। इस दुर्ग का निर्माण वारंगल के राजा ने 14वीं शताब्दी में अपने पश्चिमी क्षेत्र की रक्षा के लिए एक पहाड़ी की चोटी पर चौकी के रूप में कराया था, जिसे बाद में गोलकोण्डा किला के नाम से जाना गया। बाद में यह बहमनी राजाओं के हाथ में चला गया। 1512 ई. में यह क़ुतुबशाही राजाओं के अधिकार में आया और वर्तमान हैदराबाद के शिलान्यास के समय तक उनकी राजधानी रहा। फिर 1687 ई. में इसे औरंगजेब ने जीत लिया। यह ग्रैनाइट की एक पहाड़ी पर बना है जिसमें कुल आठ दरवाजे हैं। यहाँ के महलों तथा मस्जिदों के खंडहर अपने प्राचीन गौरव गरिमा की कहानी सुनाते हैं। मूसी नदी इस दुर्ग के दक्षिण में बहती है। दुर्ग से लगभग आधा मील उत्तर क़ुतुबशाही राजाओं के ग्रैनाइट पत्थर के मकबरे हैं जो टूटी-फूटी अवस्था में अब भी विद्यमान हैं। पर्यटक इसकी प्रभावशाली प्राचीरों, पहाड़ी महलों और प्रसिद्ध फ़तेह रहबेन तोप को देख सकते हैं, जो अपनी उल्लेखनीय ध्वनिक विशेषताओं के लिए जानी जाती है। साथ ही किले के इतिहास को आकर्षक तरीके से पर्यटकों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु शाम को ध्वनि और प्रकाश शो का आयोजन किया जाता है। इस क्षेत्र ने दुनिया के कुछ सबसे प्रसिद्ध हीरे का उत्पादन किया है, जिसमें रंगहीन कोह-ए- नूर, ब्लू होप, गुलाबी डारिया-ए-नूर, सफेद रीजेंट, ड्रेसडेन ग्रीन, रंगहीन ओर्लोव, निज़ाम और जैकब आदि शामिल हैं।

3. क़ुतुब शाही मकबरे : यह गोलकोंडा किले के पास इब्राहिम बाग़ (बाग़ परिसर) में है। क़ुतुब शाही मकबरे क़ुतुब शाही वंश के शासकों के सम्मान में बनाए गए मकबरों का एक शानदार समूह है। इन वास्तुशिल्प कलाकृतियों में जटिल नक्काशी, गुंबद और मेहराब हैं, जो उस काल की इंडो-इस्लामिक स्थापत्य शैली को दर्शाते हैं।

सांस्कृतिक स्थल:

1. चौमहल्ला पैलेस : कभी हैदराबाद के निज़ामों की गद्दी रहा चौमहल्ला पैलेस एक शानदार वास्तुशिल्प का नमूना है जो देखने में बहुत ही मनमोहक है। इसका निर्माण वर्ष 1869 में 5 वें निज़ाम अफ़ज़ल-उद-दौला, आसफ जाह पंचम के शासनकाल के दौरान हुआ था। इसके भव्य

चौमहल्ला पैलेस

हॉल, हरे-भरे बगीचे और पुरानी कारों का संग्रह पुराने ज़माने की शाही जीवनशैली की झलक पेश करते हैं।

2. सालार जंग संग्रहालय : भारत में कला और कलाकृतियों के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक, सालार जंग संग्रहालय सांस्कृतिक विरासत का खजाना है। यह मूसी नदी के दक्षिणी तट पर पुराने शहर जैसे चारमीनार, मक्का मस्जिद आदि महत्त्वपूर्ण स्मारकों के करीब है। इस संग्रहालय में रखी दुनिया भर से दुर्लभ कला वस्तुओं के संग्रहण का श्रेय सालार जंग परिवार को जाता है। लोगों का मानना है कि वर्तमान संग्रह सालार जंग III द्वारा एकत्रित मूल कला संपत्ति का केवल आधा हिस्सा है। वे न केवल प्राचीन वस्तुओं, कला और दुर्लभ पांडुलिपियों के महान संग्रहक थे, बल्कि कवियों, लेखकों व कलाकारों के भी बड़े संरक्षक थे तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करते थे। 16 दिसंबर, 1951 को सालार जंग के घर 'दीवान ड्योढ़ी' में उनके संग्रहण को संग्रहालय के रूप में घोषित कर दिया गया और इसे तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा जनता के लिए खोल दिया गया। अंतत: सालार जंग म्यूज़ियम एक्ट,1961 के तहत सालार जंग संग्रहालय और इसके पुस्तकालय को "राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान" घोषित किया गया।

अन्य आकर्षक पर्यटन स्थल :

1. हुसैन सागर झील : 5.7 वर्ग किलोमीटर में फैली हुसैन सागर झील एक कृत्रिम झील है। इस मानव निर्मित झील को हज़रत हुसैन शाह वली ने 1562 में बनवाया था। यह झील मूसी नदी की एक सहायक नदी पर बनी है। इस झील को बनाने का मूल उद्देश्य शहर को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराना था। इस झील की खासियत यह है कि यहां वर्ष भर पानी रहता है और साथ ही यह हैदराबाद और सिकंदराबाद को जोड़ने का भी काम करती है। झील के चारों ओर प्रसिद्ध नेकलेस रोड है जो रात में किसी हार में लगे हीरे की तरह चमचमाता है। नेकलेस रोड के बीच में बने हुसैन सागर से रात के समय यहां का नाजारा देखने लायक होता है। 1992 में गौतम बुद्ध की एक बड़ी सिंगल-स्टोन मूर्ति, झील के बीच में एक टापू पर खड़ी की गई। इस झील के चारों ओर कई लोकप्रिय पिकनिक स्पॉट हैं।

2. नेहरू जूलोजिकल पार्क : 380 एकड़ में फैला नेहरू जूलोजिकल पार्क दुर्लभ और लुप्तप्राय जीव-जन्तुओं का घर है। इसका निर्माण 26 अक्टूबर 1959 को शुरू हुआ और 6 अक्टूबर 1963 को इसे जनता के लिए खोल दिया गया। पर्यटक यहाँ सफारी का आनन्द ले सकते हैं और संरक्षण जागरूकता को बढ़ाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं।

आधुनिक आकर्षण केन्द्र:

1. रामोजी फिल्म सिटी: दक्षिण के मशहूर फिल्म निर्माता श्री रामोजी राव ने सन् 1996 में रामोजी फिल्म सिटी की स्थापना की। दुनिया के सबसे बड़े फिल्म स्टूडियो में से एक के रूप में, रामोजी फिल्म सिटी भारतीय फिल्म उद्योग की आकर्षक झलक पेश करता है। इसमें 500 से ज्यादा सेट लोकेशन हैं। रामोजी फिल्म सिटी में न सिर्फ देशी, बल्कि विदेशी फिल्म निर्माता भी आते हैं। फिल्म-निर्माण के अलावा रामोजी फिल्म सिटी एक प्रसिद्ध पर्यटन केंद्र भी है, जहां हर साल दस लाख से भी

हुसैन सागर

ज्यादा लोग आते हैं। इसको मानव-निर्मित आश्चर्य की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। यहाँ पर्यटक फिल्म सेट देख सकते हैं और लाइव प्रदर्शन का आनंद ले सकते हैं। इसकी व्यापकता को देखकर ही 'द गार्डियन' नामक अख़बार ने रामोजी फिल्म सिटी को "एक शहर के भीतर शहर" के रूप में वर्णित किया है।

2. हाई-टेक सिटी: हाईटेक सिटी (हैदराबाद इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग कंसलटेंसी सिटी) हैदराबाद का प्रमुख टॉउनशिप एरिया है। साइबराबाद के रूप में भी जाना जाने वाला यह शहर तकनीकी नवाचार और आधुनिक अवसंरचना का केंद्र है। जब बेंगलूरू एक आईटी सेंटर के रूप में उभरा तब आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री नारा चंद्रबाबू नायडू ने हैदराबाद को आईटी हब बनाने की योजना बनाई। नायडू ने कई आईटी कंपनियों को यहां सेंटर स्थापित करने का निमंत्रण दिया। यहां विप्रो, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, माइंडस्पेश, एलएंडटी, इंफोसिस, आईबीएम और गूगल सहित कईयों के ऑफिस हैं। अपनी ऊंची गगनचुंबी इमारतों, चहल-पहल वाले आईटी पार्कों और जीवंत नाइटलाइफ़ के साथ यह हैदराबाद के वैश्विक आईटी डेस्टिनेशन के रूप में उभरने का प्रतीक है।

3. तेलंगाना सचिवालय भवन : यह सचिवालय तेलंगाना सरकार के कर्मचारियों का प्रशासनिक कार्यालय है। इंडो-सरैसेनिक शैली में निर्मित नया तेलंगाना सचिवालय भी आम तौर पर गुंबदों के साथ इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की विशेषताओं को मिश्रित करता है। तेलंगाना सरकार ने 15 सितम्बर 2022 को आधिकारिक तौर पर इस नये सचिवालय परिसर को डॉ.बी.आर.अम्बेडकर तेलंगाना सचिवालय का नाम दिया।

हैदराबादी व्यंजन अपने सुगंधित मसालों, मज़ेदार स्वाद और पाक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। मुगलई, तुर्की और फ़ारसी पाक परंपराओं से प्रभावित, हैदराबादी व्यंजन स्वाद और टेक्सचर का एक अनूठा मिश्रण हैं। प्रसिद्ध हैदराबादी बिरयानी से लेकर स्वादिष्ट हलीम और लज़ीज़ कबाब तक, शहर का
हर व्यंजन इसकी बहुसांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब है।

हैदराबाद में बोली जाने वाली भाषा उर्दू, हिंदी, तेलुगु और फ़ारसी का एक अनूठा मिश्रण है। हैदराबाद में बोली जाने वाली विशिष्ट भाषा को हैदराबादी उर्दू या दक्कनी हिंदी के रूप में भी जाना जाता है। यह भाषा 14वीं से 18वीं शताब्दी के बीच दक्खिन के बहमनी, क़ुतुब शाही और

तेलंगाना सचिवालय भवन

हैदराबादी बिरयानी

आदिल शाही राज्यों के सुल्तानों के संरक्षण में विकसित हुई। दक्खिनी हिन्दी में शुरूआत में खड़ी बोली की शब्दावली ज़्यादा प्रचलित थी, लेकिन बाद में इसमें फ़ारसीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी। इसके अलावा, मराठी, तेलुगु, और कन्नड़ के कुछ स्थानीय शब्द भी इसमें शामिल हुए। यह भाषाई विरासत शहर के जीवंत साहित्यिक परिदृश्य में परिलक्षित होती है, जिसमें कवि, लेखक और विद्वान इसकी समृद्ध साहित्यिक परंपरा में योगदान देते हैं। दक्खिनी हिन्दी का इस्तेमाल लोक
व्यवहार के साथ-साथ साहित्य रचना के लिए भी किया गया। ख्वाजा बंदनवाज़ गेसूदराज, मोहम्मद कुली और क़ुतुब शाह इसके प्रमुख साहित्यकार थे। मीर तकी मीर और बहादुर यार जंग जैसे महान कवियों की रचनाएँ हैदराबाद की भाषाई और साहित्यिक विरासत को संरक्षित करते हुए लोगों के मन में गूंजती रहती हैं।

हैदराबाद त्योहारों का शहर है, जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग अपनी सांस्कृतिक विरासत का जश्न एक साथ मनाते हैं। चाहे ईद-उल-फितर और ईद-उल-अदहा का जीवंत उत्सव हो, दिवाली और होली का रंगारंग उत्सव हो या बोनालु और बथुकम्मा की भव्यता, प्रत्येक त्यौहार हैदराबाद की संस्कृति में चार चाँद लगाता है, तथा इसके निवासियों के बीच सद्भाव और एकता को बढ़ावा देता है।

हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत गर्व और प्रेरणा का स्रोत है, इसके संरक्षण की आवश्यकता को पहचानना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। सरकारी एजेंसियां, गैर-लाभकारी संगठन और सामुदायिक समूह शहर के स्मारकों की सुरक्षा, पारंपरिक कला और शिल्प को बढ़ावा देने और इसकी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के पहल में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

निष्कर्ष रूप में, हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत इतिहास, कला और परंपरा का खजाना है जो शहर के धरोहर को समृद्ध करती रहती है। हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत इसके विस्मयकारी स्मारकों से लेकर इसके स्वादिष्ट व्यंजनों तक यहाँ के लोगों की रचनात्मकता का प्रमाण है। अपनी विरासत को संरक्षित कर हैदराबाद आने वाली पीढ़ियों को इस जीवंत शहर की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखने की प्रेरणा देती है। चाहे पुराने शहर की प्राचीन गलियों में सैर करना हो या इसके आधुनिक हाईटेक सिटी की जीवंत ऊर्जा में डूब जाना हो, हैदराबाद अपने असंख्य आकर्षणों से पर्यटकों को मंत्रमुग्ध और प्रसन्न करने में कभी विफल नहीं होता। अंत में यह कहा जा सकता है कि वास्तव में यह शहर लंबे समय से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के लिए सामंजस्य स्थल रहा है। यह अपने गंगा-जमुना तहज़ीब के लिए जाना जाता है। यह एक ऐसा स्थान है जो लोगों को अविस्मरणीय यादें बनाने के लिए अपनी ओर आकर्षित करता है।

लेख

भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था

श्री अर्जुन दत्ता
लेखापरीक्षक

भारत अपनी विशाल जनसंख्या के साथ स्वास्थ्य बदलाव के समय की सीढ़ी पर खड़ा है। वर्षों बाद हमारे देश ने अपनी स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार करने में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। लगभग 1.4 बिलियन से अधिक लोगों की आबादी के साथ भारत दुनिया के सबसे बड़े और सबसे अधिक आबादी वाले देशों में से एक है। हाल के वर्षों में अपनी महत्त्वपूर्ण आर्थिक वृद्धि के बावजूद, भारत कई स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना कर रहा है जो देश के नागरिक कल्याण को प्रभावित करती हैं। हमारी तरक्की तभी संभव है जब हमारे नागरिक सेहतमंद होंगे ।

भारत के अनेक अस्पताल और डॉक्टर गुणवत्तायुक्त इलाज करने के लिए विदेशों में भी प्रसिद्धि हासिल कर रहे हैं, बावजूद इसके भारत में अभी भी स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएं मौजूद हैं। इन सारी समस्याओं के रहते हुए भी भारत ने अपनी चिकित्सा विज्ञान में विभिन्न आपूर्ति प्रणालियों, उपचार शैलियों और शल्य तकनीकों में अभूतपूर्व प्रगति की है। कटिंग–एज (cutting-edge) तकनीकों और चिकित्सा प्रौद्योगिकी के विकास से स्वास्थ्य पेशेवरों की क्षमता में सुधार हुआ है। चिकित्सा अनुसंधान ने विभिन्न पुनरावृत्ति और संक्रमण रोगों के लिए अधिक प्रभावी दवाओं और चिकित्सा का विकास किया है। वे बिमारियाँ जो कभी घातक मानी जाती थीं, वे अब उचित प्रबंध से निवारित की जा रही हैं। उदाहरण के लिए कैंसर, हृदय रोग और मधुमेह के उपचार में सुधार होने से परिणाम बेहतर हो गए हैं फलस्वरूप भारत में औसत जीवनकाल में वृद्धि हुई है।

> **“समान स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच प्रदान करना एक समृद्ध समाज बनाने की कुंजी है।**

एक समृद्ध और समर्थ समाज का निर्माण करने में मातृत्व और शिशु स्वास्थ्य का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जननी और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार न केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी होती है बल्कि एक समर्थ समाज की संरचना में भी अहम भूमिका निभाता है।

जननी स्वास्थ्य में सुधार के लिए सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है, जैसे कि मातृत्व स्वास्थ्य कैंपस, जागरूकता कार्यक्रम और आदेशपूर्ण स्वास्थ्य योजनाएं। समुदाय में महिलाओं को अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं की ओर प्रवृत्त करने के लिए निश्चयात्मक सोच और जागरूकता को बढ़ावा देना भी जरूरी है। साथ ही, नवजात शिशु के लिए सही पोषण, टीकाकरण और स्थाई देखभाल से ही उनके बेहतर स्वास्थ्य को सुनिश्चित कर सकते हैं।

भारत सरकार ने भी देश के स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार लाने के

लिए कई सारे उपाय एवं योजनाएं बनाई हैं जैसे कि आयुष्मान भारत – प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना – यह योजना भारतीय नागरिकों को नि:शुल्क चिकित्सा सुरक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखती है, जिससे गरीब और विपन्न वर्ग के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। राष्ट्रीय पोषण मिशन (National Nutrition Mission) या पोषण अभियान भारत सरकार द्वारा चलाई जाने वाली एक और महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल है, जिसका उद्देश्य बाल स्वास्थ्य और पोषण को बेहतर बनाना है। इसका मुख्य लक्ष्य भारतीय बच्चों को सही पोषण देने, खासकर 5 वर्ष तक के आयु के बच्चों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाना और यह सुनिश्चित करना है कि उन्हें सही पोषण प्राप्त हो।

इन सभी प्रगतियों के बावजूद भारत के स्वास्थ्य व्यवस्था में कुछ कमियां भी हैं, जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं की असमान उपलब्धता एक प्रमुख कमी है। यह असमानता स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, उपयोग की विशेषता और इस्तेमाल की गुणवत्ता में देखी जाती है। यह समस्या विशेषकर अविकसित और विकासशील राष्ट्रों में देखी जाती है। आर्थिक स्थिति में असमानता भी एक मुख्य कारण है जो स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में अंतर बनाता है। गांव के इलाकों में सामाजिक और आर्थिक स्थिति के कारण वहाँ स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता कम होती है। धन की कमी से अधिकतर व्यक्ति उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में असमर्थ होते हैं। इनके समाधान हेतु सरकार और स्वास्थ्य संगठनों को सामाजिक और आर्थिक समानता की स्थिति में स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए काम करना चाहिए। समान स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच प्रदान करना एक

समृद्ध समाज बनाने की कुंजी है।

सरकार, स्वास्थ्य संगठनों तथा समाज के सभी सदस्यों को मिलकर इस समस्या का समाधान ढूँढने में योगदान करना होगा ताकि हर किसी को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हो सके।

एक और पहलू जिस पर हमें ध्यान देना है, वह है चिकित्सा पर होने वाले भारी खर्चे। चिकित्सा विज्ञान में हुई तकनीकी उन्नति ने नए उपचारों की उत्पत्ति को बढ़ाया है, जिससे चिकित्सा सेवाएं और भी महंगी हो गई हैं। लोग अब बेहतर चिकित्सा उपचार की मांग कर रहे हैं जिससे चिकित्सा के ऊपर ज्यादा खर्च हो रहा है। इसके समाधान के तौर पर कुछ कदम उठाना आवश्यक है जैसे कि सरकार को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने और विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं की पहुँच को बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए। उच्चतर गुणवत्ता वाले उपचारों की उपलब्धता में सुधार के लिए नए और अधिक दक्ष प्रोफेशनल्स को प्रोत्साहित करना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से डॉक्टर्स और औषधियों की सुविधा में सुधार किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष के तौर पर, भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली एक बहुपक्षीय दृष्टिकोण से देखी जा सकती है जिसमें कुछ अद्भुत उपलब्धियाँ हैं, साथ ही कुछ कमियां भी हैं। इस प्रणाली ने बड़ी आबादी और विभिन्न सामाजिक आर्थिक वर्गों की सांस्कृतिक विविधता के बावजूद विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने का काम किया है। भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली को कई कमियों का सामना भी करना है जैसे आसान पहुँच, चिकित्सा अवसंरचना की कमी, डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की कमी, और चिकित्सा खर्च में बढ़ोतरी इसमें शामिल है। अतः हमें ऐसी दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है जिससे स्वास्थ्य सेवाएं सामाजिक और आर्थिक रूप से देश के समग्र विकास में योगदान दे सके।

लेख

संन्यास जीवन की नई शुरुआत : विशेष रुप से सेवानिवृत्ति के दिनों का महत्त्व

श्री बी. रामाकृष्णा
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

व्यक्ति का जीवन एक स्वाभाविक स्रोत की तरह है, जिसमें विभिन्न युगों और परिस्थितियों के साथ बदलाव होता है। जीवन के एक अद्वितीय चरण का नाम है "सेवानिवृत्ति" या "निवृत्ति"। इस चरण में व्यक्ति अपनी नौकरी या व्यापार से संन्यास लेता है और अपनी आत्मा की तरफ ध्यान केंद्रित करता है।

सेवानिवृत्ति का महत्त्व - सेवानिवृत्ति का अर्थ है, अपने पेशेवर जीवन की समाप्ति, जिसमें व्यक्ति अपने कार्यों से संतुष्ट होकर अच्छे और प्राथमिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ता है। यह एक महत्त्वपूर्ण घड़ी है जब व्यक्ति अपने जीवन के अगले पड़ाव में प्रवेश करता है और समाज में अन्य तरीकों से भी योगदान करने का निर्णय लेता है।

तैयारी और योजना - सेवानिवृत्ति की योजना बनाते समय 'तैयारी और योजना' एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। व्यक्ति को अपनी आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और सामाजिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए अपने संन्यास की योजना बनानी चाहिए। यह भी सुनिश्चित करना जरूरी होता है कि उनके पास अपने जीवन के इस चरण के लिए आरामदायक अवस्था हो।

आत्म-समर्पण और साधना - सेवानिवृत्ति के दौरान आत्म-समर्पण और आध्यात्मिक साधना महत्त्वपूर्ण होती है। यह एक ऐसा समय है जब व्यक्ति अपनी आत्मा के प्रति एकाग्रता बढ़ाता है और आध्यात्मिक अनुभवों की साधना करता है। योग और ध्यान की प्रैक्टिस से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखना भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

समाज में योगदान - सेवानिवृत्ति के बाद व्यक्ति का समाज के लिए योगदान और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में अपने अनुभवो और ज्ञान को साझा करके, वह समाज को और भी समृद्ध और उन्नत करने की दिशा में मदद कर सकता है।

संस्कृति में सेवानिवृत्ति का महत्त्व - भारतीय संस्कृति में सेवानिवृत्ति को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। संत, साधु और योगीजनों ने अपने जीवन के इस चरण में आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन का प्रयास किया है और अपनी आत्मा को समर्पित किया है।

निष्कर्ष - सेवानिवृत्ति एक अद्वितीय और महत्त्वपूर्ण चरण है जो व्यक्ति को आत्मा की खोज और सामाजिक सेवा के माध्यम से अद्वितीयता की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर देता है। यह एक जगत सत्य है जो जीवन को एक नए और उच्च स्तर पर ले जाने में मदद कर सकता है।

कविता

तलाश

श्री रोहित किरोड़ीवाल
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं जो ढूँढ रहा था वो मुझे मिला नहीं
बहुत भागा, बहुत दौड़ा
पर जो दिखा वो अपना नहीं
शायद खो गया था मैं उसे ढूँढते-ढूँढते
पर वापस किनारा मुझे मिला नहीं

कभी इस डगर कभी उस डगर
भटकता रहा, ढूँढता रहा मैं उसे पर यह समझ ना पाया
कि कभी जो मेरा था नहीं वो मुझे मिला नहीं

लौटना चाहता हूँ फिर मैं उसी राह पर
जहाँ से मैंने ढूंढना शुरू किया था
पर अब खो चुका हूँ इतना कि
वो रास्ता मुझे दोबारा मिला नहीं

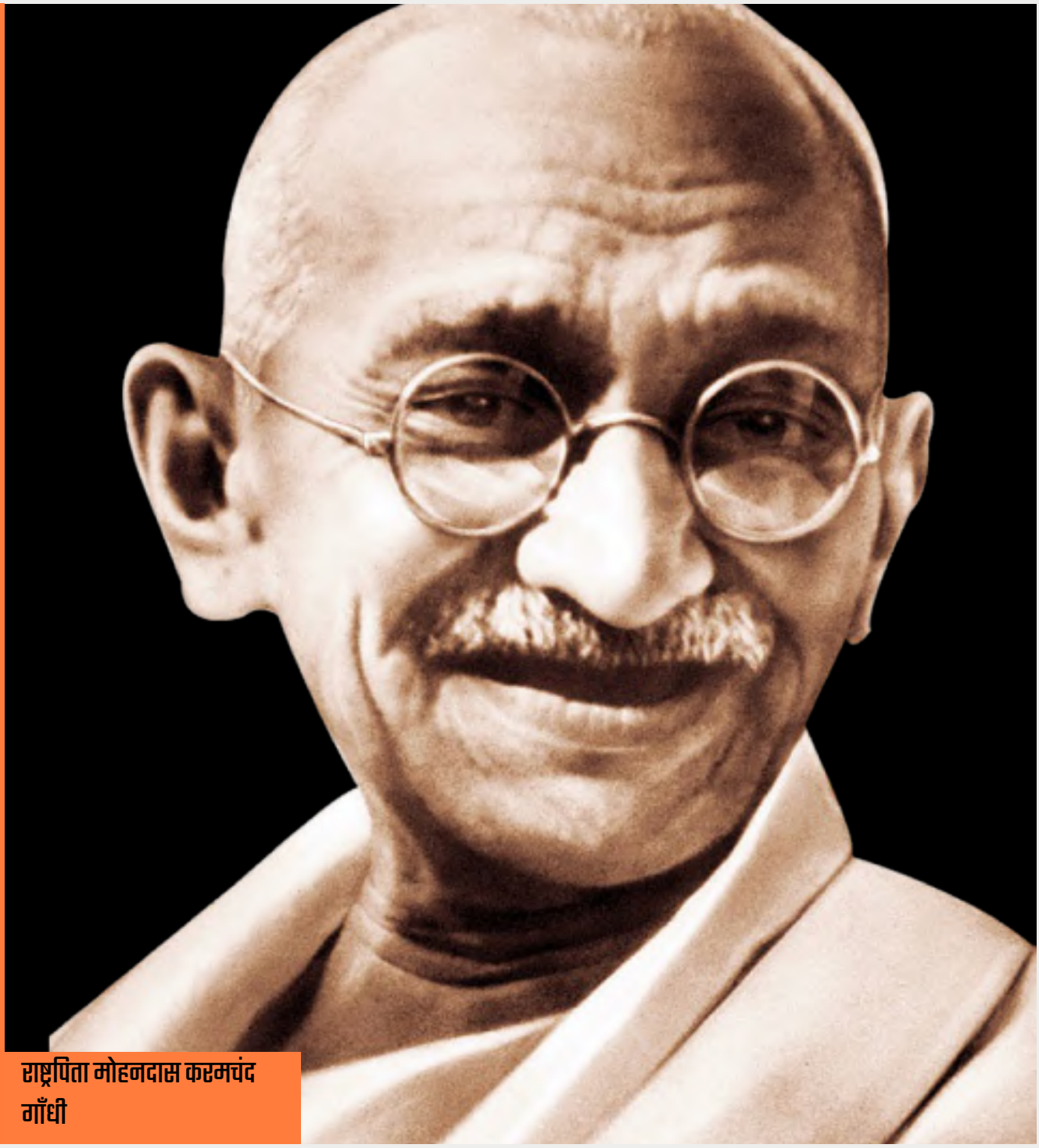

राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गाँधी

अगर गाँधीजी आज भी आ जाएं तो आज भी उतने ही रेलिवेन्ट होंगे जितने पहले थे, ये व्यक्ति हमेशा प्रसांगिक थे और हमेशा प्रसांगिक रहेंगे... क्योंकि उनकी सोच भारत की मूल सोच थी।

लेख

गांधी तथा उनके बारे में भ्रांतियाँ

श्री संदीप सिंह
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

आज से तक़रीबन 109 साल पहले गाँधी जी भारत आए थे और वो भी एक वैभवशाली जीवन छोड़ के। वे जब यहाँ आए थे उस समय विदेश में उनका व्यवसाय भी काफी अच्छा चलने लगा था। लोगों से सम्मान भी मिलने लगा था। उस समय ब्रिटेन आर्थिक रूप से एक बहुत ही मजबूत देश था। पहले विश्व युद्ध में जर्मनी को हरा चुका था। ऐसे गुलाम भारत में क्या कोई इंसान एक वैभव जीवन छोड़ के आने के बारे में सोच भी सकता है? यहाँ की दो-तिहाई आबादी जो दुर्बल और दरिद्र थी, इन लोगों को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए क्या कोई तैयार कर सकता था? स्वयं भारतीय क्या इसके लिए तैयार थे?

अपनी आत्मकथा "माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ" में गाँधी जी ने साफ-साफ लिखा है कि उनकी तमाम सीमाएं थी और वे कोई बहुत नैसर्गिक प्रतिभा के धनी नहीं थे। अधिकारियों के सामने खड़े हो जाते तो अपनी बात रखना मुश्किल हो जाता था। खुद ही बोलते हैं कि आवाज नहीं निकलती थी। आत्मविश्वास की इतनी कमी थी, ये गाँधी जी ने खुद ही सहज भाव से लिख दिया और उनमें वो हिम्मत थी कि जो उनकी कमजोरी थी वो भी उन्होंने अपनी आत्मकथा में खुद ही लिख डाली । गाँधी में बहुत कुछ ऐसा है जो सीखने-सिखाने लायक है। पर उस पर बहुत कम लोग बात करते हैं और उस पर बहुत ही कम लिखा जाता है। बस एक-दो चीजों पर ही सब बात करते हैं। आप उनका कुछ नहीं बिगाड़ रहे, बस आप अपने लोगों का नुकसान कर रहे हो। गाँधी जी में वो हिम्मत थी कि वो जो भी कर रहे थे वो सार्वजनिक जीवन में था। जिसके लिए आप उनको बदनाम कर रहे हो अगर वो चाहते तो वो चुपचाप कर लेते। जब वो चलते थे तो उनके सामने उनकी तस्वीर खीची जा रही थी। आप आजकल सोशल मीडिया पर ज्यादातर युवकों/युवतियों के कमेंट देखिये। यह है आज के पढ़े-लिखे लोगों का ज्ञान। इससे पता चलेगा उन्होंने गाँधी को कुछ जाना ही नहीं।

अगर गाँधी जी आज भी आ जाएं तो आज भी उतने ही प्रासंगिक होंगे जितने पहले थे। ये व्यक्ति हमेशा प्रासंगिक थे और हमेशा प्रासंगिक रहेंगे क्योंकि उनकी सोच भारत की मूल सोच थी.. जिस सोच पर भारत हमेशा भारत बना रहा और अपने अहिंसा और सत्य के मार्ग के लिए जाना गया। सारी दुनिया जब भारत की ओर देखती है, तो यहाँ गाँधी

साउथ अफ्रीका से भारत वापिस लौटते गांधी जी

जैसे लोगों को ढूंढती है.. आप कितनी भी अफरातफरी मचा लें मगर सारी दुनिया का भारत के प्रति नज़रिया बदल नहीं सकते हैं। और यह एक ऐसा नज़रिया है जो शायद ही किसी दूसरे देश को "नसीब" हुआ हो.. इस सोच को हमें सहेजना है। इस नज़रिए को और हौसला देना है। यह हम सबकी ज़िम्मेदारी है।

गाँधीजी अगर उस समय नहीं होते तो हमें आज़ादी उस दिन तो नहीं ही मिली होती जिस दिन मिली थी और हम गाँधीजी को सिर्फ एक ऐंगल से देखते है कि उन्होंने आज़ादी के लिए, शिक्षा के लिए, फेमिनिज़्म, समाज सुधार के लिए बहुत काम किए। जो गाँधी पर इलज़ाम लगा रहे हैं उनसे दुनिया क्या सीखे - यह भी बता दीजिए। आपका कॉन्ट्रिब्यूशन बस इतना है कि आप गाँधी को बुरा-भला बोल लीजिए । कुछ तो सम्मान कर लो नवयुवकों! मैं भी गाँधी जी की बहुत-सी बातों से सहमत नहीं हूँ, पर हजारों बातों से तो सहमत हूँ और रहूँगा।

आज के समय में सबकी अपनी एक फिलोसॉफी है और होनी भी चाहिए, पर वो फिलोसॉफी आई कहाँ से है पढ़-लिख के आई तो ठीक है पर ज़्यादातर लोग पहले से ही मान बैठे हैं कि गाँधीजी बुरे/अच्छे हैं और यहीं से दिक्कत शुरू हो जाती है। जो गाँधीजी के बारे में अभद्र बोल रहे है, मैं शत-प्रतिशत यकीन के साथ बोल सकता हूँ कि उन्होंने गाँधी को जाना ही नहीं। जो उनके धूर-विरोधी थे उन्होंने भी उनका सदैव सम्मान किया। उन पर एक बार तो विचार करो, उनका असली मूल्य समझो। मत चलो उनके सिद्धांतों पर, मत मानो उनके आदर्शों को; लेकिन उनको एक बार ठीक से पढ़ लो, जान लो, वैसा कोई मानव आज भी खड़ा हो जाए तो सबको बहुत अच्छा लगेगा, आसान नहीं होता गांधी बनना।

गांधीजी 1930 नमक मार्च का नेतृत्व करते हुए, जो सत्याग्रह (अहिंसक प्रतिरोध) का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

कविता

तमन्ना

श्री संदीप कश्यप
लेखापरीक्षक

अपने हिस्से के आसमान को पाने निकला हूँ
अपने हर ख्वाब को हक़ीक़त बनाने निकला हूँ
इस दुनिया में एक हमदर्द नहीं मिलता,
मैं हमदर्दों की पूरी दुनिया बसाने निकला हूँ
ना मौत का खौफ है ना किस्मत की फिक्र,
मैं तूफान में एक समा जलाने निकला हूँ
सारी दुनिया रूठी है तो रूठी रहे मुझसे,
मैं अपने मुकद्दर को मनाने निकला हूँ

कहानी

संगीत की महारानी

सुश्री प्रीति
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

दिलचस्पी से भरी एक जगह थी, जहां संगीत और जादू का अद्भुत संगम होता था। यहां की सबसे विशेष बात यह थी कि संगीत की इस दुनिया का नेतृत्व करने वाली महारानी ने जादू की शक्ति को संगीत के साथ जोड़ दिया था। एक दिन, जब महारानी ने संगीत का एक महान उत्सव आयोजित किया तब वहां एक रहस्यमयी संगीतकार आया। उसका नाम था एल्विन, जो कि संगीत के जादू के साथ एक रहस्यमयी ताल में भी निपुण था।

उसने महारानी को चुनौती दी कि वह उन्हें एक नया संगीतीय ताल दिखाने के लिए तैयारी करे। महारानी ने एल्विन की चुनौती स्वीकार की और वे एक नए संगीतीय राज्य की यात्रा पर निकल पड़े। उनकी यात्रा में जादू, रोमांच और संगीत के जादूई अनुभव थे।

एल्विन का आगमन सभी को आकर्षित कर गया। उसने महारानी को चुनौती दी कि वह एक नया संगीतीय ताल दिखाने के लिए तैयारी करे। महारानी ने एल्विन की चुनौती स्वीकार की और वे दोनों एक नए संगीतीय राज्य की यात्रा पर निकल पड़े । उनकी यात्रा में जादू, रोमांच और संगीत के जादूई अनुभव थे। जब वे अपनी यात्रा के दौरान चुनौतियों का सामना कर रहे थे, तब एक रहस्यमयी परी ने उनका मार्गदर्शन किया। वह परी संगीत के रहस्य को समझने में मदद करने वाली थी।

एक दिन, उन्होंने रहस्यमयी ताल खोज लिया जो दुनिया में किसी ने नहीं सुना था। वो ताल संगीत की नई ऊँचाइयों को छूने का संदेश लेकर आया। एल्विन ने नया ताल महारानी को सिखाया

और उन्होंने उस ताल का उपयोग करके एक नया संगीतीय राज्य बनाया। संगीत और जादू का नया संगम हुआ और वहां का हर एक व्यक्ति इसमें रंगीनता और ख़ुशियों की भरमार महसूस करता था। इस राज्य में संगीत की महारानी और रहस्यमयी संगीतकार ने साथ मिलकर एक नई यात्रा आरंभ की थी, जो दुनिया को संगीत और जादू के नए आयामों तक ले गई।

एल्विन और महारानी ने नए संगीतीय राज्य को बचाए रखने के लिए संगठन की योजना बनाई। उन्होंने संगीत और जादू की शक्ति का सहयोग लिया और एक संगठन बनाया जो संगीतीय जगत की सुरक्षा और समृद्धि के लिए काम कर रहा था।

संगीत की महारानी और रहस्यमयी संगीतकार एक साथ संगठन के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण का कार्य कर रहे थे। वे नए और युवा संगीतीय तालबंदी को प्रोत्साहित कर रहे थे, जिन्होंने अपनी कला में महारत हासिल की और संगीत जगत में नए आयाम स्थापित किए।

उनका संगठन बड़ा होता गया, और संगीत एवं जादू के संगम को बचाने के लिए एक महान टीम तैयार हुई। उन्होंने संगीत के माध्यम से लोगों के दिलों में एकता और सौहार्द की भावना फैलाई।

एक दिन, राज्य में एक बड़ा संगीतीय उत्सव हुआ। संगीत की महारानी और एल्विन ने एक साथ एक नया संगीतीय नृत्य प्रस्तुत किया, जिसने सभी को आकर्षित किया। उनका नृत्य संगीत और जादू की महिमा को साकार रहा था ।

उसी संगीतीय राज्य का राजा, जो संगीत की महारानी का प्रेमी था, उसके मन में अनेक विचार उत्पन्न हो रहे थे। वह महारानी के संगीत उत्सव में एल्विन और महारानी के संबंध पर शक कर रहा था। राजा ने एक परीक्षा लेने का फैसला किया -

...राजा को पछतावा हुआ और उन्होंने स्वीकार किया कि संगीत की महारानी और एल्विन का प्यार निष्कलंक है।

उसने एक महान नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें महारानी और एल्विन को एक साथ नृत्य करते हुए देखना चाहा। यह परीक्षा उनके संबंधों की सच्चाई और उनके संगीतीय जीवन की सांझा राह पर चलने की भी एक जांच थी।

प्रतियोगिता का दिन आया। नृत्य के दौरान, महारानी और एल्विन ने अपने जीवन की कहानी को संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। उनका नृत्य संगीत और जादू की दुनिया को नए आयामों तक ले गया। राजा ने उनके नृत्य को देखा और उनकी प्रतिभा में मुग्ध हो गया। उनके नृत्य में रंग-बिरंगी रस्में और संगीत की ताकत थी, जो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था।

प्रतियोगिता के बाद, राजा को पछतावा हुआ और उन्होंने स्वीकार किया कि संगीत की महारानी और एल्विन का प्यार निष्कलंक है। उन्होंने समझा कि उनका संबंध उनके संगीतीय उत्सवों और संगठन में नई ऊँचाइयों को हासिल करने में मदद कर रहा था। राजा ने यह समझा कि संगीत प्यार और समृद्धि का एक संगम है, जो उनकी राजधानी के हर निवासी को भाता था।

राजा का विश्वास और महारानी तथा एल्विन की दोस्ती ने राज्य को नई दिशा दी। उन्होंने एक संगठन बनाया जो संगीत और जादू के संगम को सुरक्षित रखने के साथ-साथ राज्य के लोगों को नए स्वर्गीय अनुभव देता था। राजा ने उनके संगठन को समर्थन और संदेश दिया कि संगीत और प्यार का संगम ही वास्तविक समृद्धि है। उन्होंने संगठन को सरकारी स्तर पर भी समर्थन दिया, ताकि संगीतीय

उत्सवों की सुरक्षा हो सके और उनको बढ़ावा मिले।

महारानी और एल्विन ने अपनी दूरदर्शिता और संगीतीय ज्ञान के साथ राज्य के युवा तालबंदियों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने नए और अद्भुत संगीतीय रागों को सिखाया और उन्हें बढ़ावा दिया, जिससे राज्य की संगीतीय विरासत और महानता बढ़ी।

राजा ने अपने लोगों को यह शिक्षा दी कि संगीत और प्यार का संगम सिर्फ मनोरंजन का ही एक साधन नहीं होता, बल्कि यह एक समृद्ध और समर्थ राष्ट्र की नींव हो सकता है। संगीत, प्यार और समृद्धि का यह संगम नए आयामों को प्राप्त कर राज्य को अनुभवशीलता और सहयोग की दिशा में ले जा रहा था। राजा, महारानी और एल्विन की साझी सोच और प्रयासों ने राज्य को नए संगीतीय और सांस्कृतिक ऊर्जा का संदेश दिया।

इससे न केवल राज्य की आर्थिक वृद्धि हुई, बल्कि लोगों के दिलों में एकता, सहयोग और प्रेम की भावना भी बढ़ी। राजा का विश्वास और महारानी तथा एल्विन की साझी दृढ़ता ने उनके राज्य को एक संगीतीय और सांस्कृतिक नगरी के रूप में माना।

यह कहानी संगीत, प्यार और समृद्धि के संगम के बारे में है, लेकिन सबसे अधिक इस कहानी में मित्रता का महत्त्व है। राजा, महारानी और एल्विन के बीच की दोस्ती ने न केवल एक संगीतीय समृद्धि का संदेश दिया, बल्कि उन्होंने साझी दृढ़ता और मिलनसार भावना के माध्यम से राज्य को एक अद्भुत और सामर्थ्यपूर्ण राष्ट्र में बदल दिया।

मित्रता ने उन्हें साझा विश्वास, समर्थन और सहयोग की भावना दी। यह उन्हें अपने लक्ष्यों की दिशा में साथ मिलकर बढ़ने की शक्ति और उत्साह प्रदान करता रहा।

मित्रता ने उन्हें आपसी समझ और सम्मान की भावना सिखाई। साथ ही उन्हें एकजुटता का आदर्श बनाया और राज्य के लिए एक मिशन में साथ मिलकर काम करने की प्रेरणा दी।

मित्रता की शक्ति ने राज्य के नागरिकों में सामरिक और सामाजिक संगठन की भावना पैदा की। इससे उन्होंने साझा विकास और समृद्धि के लिए समर्थ राष्ट्र की नींव रखी।

आखिरकार, यह कहानी हमें यह बताती है कि मित्रता और समर्थन ही वो शक्ति होती है, जो हमें साथ मिलकर हर मुश्किल से निपटने में मदद करती है। यह उन्हें एकजुट और संगठित बनाती है, जिससे राज्य की प्रगति में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

यह संदेश आज भी हमें याद दिलाता है कि साथ मिलकर काम करने से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और समृद्धि की नई ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं।

हिन्दी पखवाड़ा 2023 की कुछ झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित शब्द पहेली प्रतियोगिता में सक्रिय रुप से भाग लेते प्रतिभागी

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित प्रश्न मंच प्रतियोगिता का संचालन करते हुए श्री संदीप सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लेख

भारत : शांति के पक्ष में

श्री राहुल कुमार
व. अनुवादक

गत वर्ष यूक्रेन के विदेश मंत्री द्म्यत्रो कुलेबा (Dmytro Kuleba) ने बयान दिया था कि भारत रूस से कच्चा तेल खरीद कर यूक्रेनियों का खून खरीद रहा है। वास्तविकता में, रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध में भारत की कूटनीति का रुझान अमरीका और यूरोप के देशों से बिल्कुल भिन्न रहा है। इस रवैये पर भारत को पश्चिमी देशों से काफी आलोचना का भी सामना करना पड़ा है। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह आलोचना वाजिब है?

भारत ने हमेशा से ही गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति का पालन किया है और हमेशा शांति का पक्षधर रहा है। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध पर भारत के प्रधानमंत्री ने उज़्बेक शहर समरकंद में रूसी राष्ट्रपति पुतिन के साथ द्विपक्षीय बैठक में स्पष्ट रूप से कहा था, "आज का युग युद्ध का नहीं है" और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से रूसी अतिक्रमणता को नाकारा था। इतना ही नहीं हाल ही में यूक्रेन संकट पर सऊदी अरब में आयोजित दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजित डोभाल ने यह भी कहा कि भारत यूक्रेन को मानवीय सहायता और ग्लोबल साउथ में अपने पड़ोसियों को आर्थिक सहायता दोनों प्रदान कर रहा है। भारत का दृष्टिकोण हमेशा संवाद और कूटनीति को बढ़ावा देने का रहा है और रहेगा। शांति के लिए आगे बढ़ने का यही एकमात्र रास्ता है।

इससे यह स्पष्ट है कि रूस-यूक्रेन मुद्दे पर भारत की निंदा तथ्यों और वास्तविकता पर आधारित न होकर भारत पर दवाब बना कर भारत की स्वतंत्र विदेश नीति को प्रभावित करने की है और जहाँ तक

"कुछ लोग कहते हैं कि हम तटस्थ हैं। लेकिन हम तटस्थ नहीं हैं। हम शांति के पक्ष में हैं। दुनिया को पूरा विश्वास है कि भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता शांति है।"

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

रूस से कच्चे तेल की खरीद का सवाल है, तो म्युनिक सिक्यूरिटी कांफ्रेंस 2020 में तात्कालिक/वर्तमान विदेश मंत्री श्री जयशंकर द्वारा दिए गए एक वक्तव्य के अनुसार भारत का रूस से महीने भर में किए गए कच्चे तेल का आयात यूरोप द्वारा एक दोपहर में किए गए आयात से भी कम है। अतः इन देशों द्वारा भारत के आयात पर टिप्पणी करना शोभा नहीं देता और यह पश्चिमी देशों के दोहरे मापदंड को भी दर्शाता है।

इन सभी वर्तमान पक्षों को अगर कुछ देर के लिए नजरअंदाज भी कर दिया जाए तो भी भारत के पास रूस का बहिष्कार नहीं करने के बहुत ही मजबूत एवं न्यायोचित कारण हैं। जहाँ यूक्रेन ने कश्मीर के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में हमेशा भारत के विरुद्ध वोट किया है और पाकिस्तान को हथियार भी उपलब्ध कराए हैं वहीं दूसरी तरफ रूस ने भारत की आज़ादी से वर्तमान तक हर कदम पर भारत का साथ निभाया है चाहे वह संयुक्त राष्ट्र में अपने वीटो का उपयोग करके भारत के हितों की रक्षा करना हो या चाहे वो युद्ध जैसे विकट संकट के समय भारत के पक्ष में जंग के लिए तैयार रहना ही क्यों न हो।

उदाहरण के लिए 1971 का भारत – पाकिस्तान युद्ध में अमरीका, ब्रिटेन, सऊदी अरब आदि कई देश खुल कर पाकिस्तान को सैन्य सहायता प्रदान कर रहे थे। सोवियत संघ ने भारत को आश्वासन दिया था कि अमरीका या चीन से किसी भी प्रकार का आमना-सामना होने पर वह जवाबी कदम उठाएगा और आख़िरकार यही हुआ। जब पाकिस्तान की ईस्ट पाकिस्तान में हार निश्चित प्रतीत होने लगी तब अमरीका और ब्रिटेन ने मिलकर भारत का घेराव करने के लिए रणनीति बनाई। अमरीका ने बंगाल की खाड़ी में यूएसएस एंटरप्राइज एयरक्राफ्ट कैरियर और ब्रिटेन ने एचएमएस ईगल नामक एयरक्राफ्ट कैरियर तैनात कर दिया। भारत के अनुरोध पर सोवियत संघ ने जवाबी कार्रवाई करते हुए क्रूज़र और डिस्ट्रॉयर के दो समूह और एक न्युक्लियर पनडुब्बी को बंगाल की खाड़ी में तैनात किया। नतीजन अमरीका और ब्रिटेन

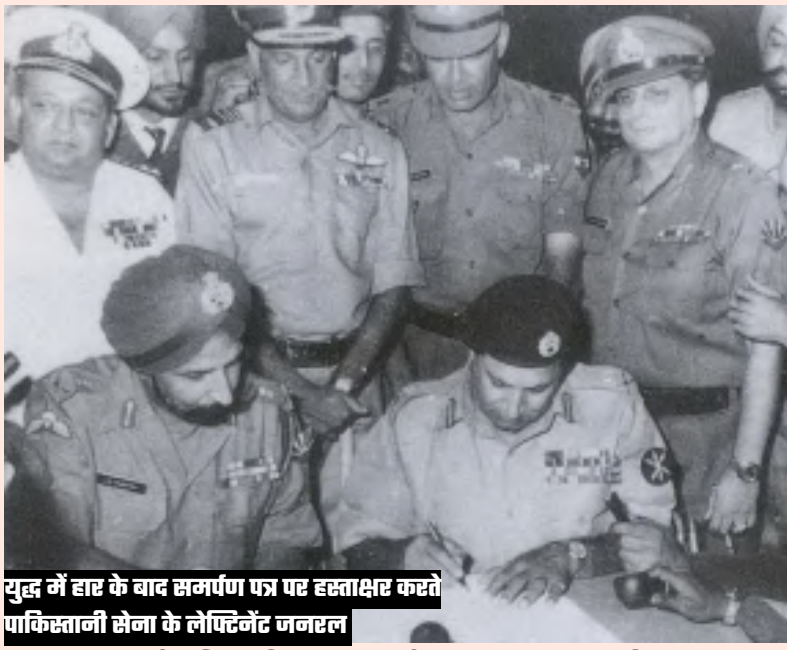

युद्ध में हार के बाद समर्पण पत्र पर हस्ताक्षर करते पाकिस्तानी सेना के लेफ्टिनेंट जनरल

द्वारा भारत के लिए किया गया घेराव कारगार साबित नहीं हुआ जिससे भारत की इस युद्ध में जीत निश्चित हो सकी। अगर समय पर सोवियत संघ द्वारा यह

कदम नहीं उठाया गया होता तो इस जंग का नतीजा शायद कुछ और ही होता।

इसके अतिरिक्त अभी तक रूस भारत के पक्ष में संयुक्त राष्ट्र संघ में 06 बार वीटो का उपयोग कर चुका है और पश्चिमी देशों की तरह भारत को हर तरह के हथियार और नवीनतम सैन्य तकनीक हस्तांतरित करने में कोताही नहीं बरतता।

भारत के यूक्रेन संकट के सन्दर्भ में लिए गए निर्णय बिल्कुल संतुलित रहे हैं। भारत की विदेश नीति हमेशा से स्वतंत्र रही है। दूसरे देश दो शक्तियों के घमासान के बीच पक्ष चुनने को मजबूर हो जाते हैं, परन्तु भारत ने किसी के दवाब में अपनी नीति में बदलाव नहीं किया। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का निम्न वक्तव्य भारत के रुख़ को स्पष्ट करता है –

"कुछ लोग कहते हैं कि हम तटस्थ हैं। लेकिन हम तटस्थ नहीं हैं। हम शांति के पक्ष में हैं। दुनिया को पूरा विश्वास है कि भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता शांति है।"

हिन्दी पखवाड़ा 2023 की कुछ झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के संचालकों एवं विजेताओं को पारितोषिक प्रदान करते हुए महानिदेशक महोदय एवं निदेशक महोदय

हिन्दी पखवाड़ा 2023 की कुछ झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के संचालकों एवं विजेताओं को पारितोषिक प्रदान करते हुए महानिदेशक महोदय

लेख

कार्यालयी परियोजनाओं में दिव्यांग लोगों के समावेशन की संभावनाएं और चुनौतियाँ

श्री विवेक कुमार सिंह
क. अनुवादक

कार्यालयी परियोजनाओं में दिव्यांग लोगों का समावेशन समाज में समर्थता और समानता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। इस मुद्दे को समझने के लिए, हमें दोनों संदर्भों को ध्यान में रखना होगा, पहला - दिव्यांगता से जुड़ी चुनौतियों को समझना और दूसरा - उनके समावेशन को बेहतरीन ढंग से समावेशित करने के लिए संभावनाएं ढूंढना। दिव्यांगता से जुड़ी चुनौतियों में शारीरिक, तकनीकी और सामाजिक प्रकार की चुनौतियां शामिल होती हैं। दिव्यांग लोगों की अनुकूलता और उनकी आवश्यकताओं को समझकर उन्हें सहयोग करने और समावेशित करने के लिए संरचनात्मक और तकनीकी सुधार की आवश्यकता होती है जैसे कि विशेष कंप्यूटरीकृत साधनों का उपयोग, सुधारित कार्यस्थल की सुविधा और संरचना, सामाजिक संपर्कों को बढ़ावा देना और उन्हें प्रोत्साहित करना। साथ ही, इन सभी पहलुओं को संभावित समाधानों के साथ जोड़ना जरूरी है। तकनीकी सुधार, सामाजिक संपर्कों का बढ़ावा और संगठनों के नीतियों की सुधार हर दिव्यांग व्यक्ति को सशक्त करने के लिए आवश्यक है।

इस लेख में, हम देखेंगे कि कैसे दिव्यांग लोगों को कार्यालयी परियोजनाओं में समावेशित किया जा सकता है, उनके समर्थन के अवसर और उनकी चुनौतियों को समझेंगे।

मुख्य विचार

> “कार्यस्थलों में दिव्यांगजनों को समावेशित करने के लिए, वहाँ की सुविधाओं में सुधार करना अत्यंत जरुरी है।

एक समाज तब समृद्ध बनता है जब समाज के सभी व्यक्ति और समूहों को उचित और समान अवसर मिलते हैं। इसी सन्दर्भ में हमारे राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गाँधी ने सर्वोदय की बात कि थी, “सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले”। दिव्यांग लोगों के समावेशन में नीचे विदित कई पहलुओं पर और बल देने की ज़रूरत है।

अभिवृद्धि के लिए समर्थन:
दिव्यांगता के संबंध में सामाजिक संजालों में जागरूकता बढ़ाना और शिक्षा का प्रसार करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शैक्षिक संसाधनों की सही व्यवस्था करनी चाहिए जो दिव्यांगता के स्तर और प्रकार के आधार पर समर्थन प्रदान कर सके। व्यक्तिगतीकरण के माध्यम से उनके लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, उन्हें अपनी सक्षमता का बेहतर तरीके से उपयोग करने की सीख मिलनी चाहिए। समर्थनीय माहौल और संरचनाएं तैयार करने से वे

स्रोत : transformingindia.gov.in

समाज में अपना स्थान बना सकते हैं और अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

कार्यस्थल की सुविधाओं में सुधार:
कार्यस्थलों में दिव्यांगजनों को समावेशित करने के लिए, वहाँ की सुविधाओं में सुधार करना अत्यंत जरूरी है। उन्हें अधिक से अधिक एक्सेसिबिलिटी देना चाहिए ताकि उन्हें कार्यस्थल की सामान्य गतिविधियों में भाग लेने में कोई दिक्कत न हो। संरचनात्मक परिवर्तन, तकनीकी सुधार और सामाजिक संबंधों में बदलाव सहयोगी साबित हो सकते हैं। इसके साथ ही भारत सरकार ने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कार्यस्थल में सुधार करने के लिए कई कदम उठाए हैं जैसे रोजगार सम्बंधित सुधार, अधिकृत सुधार कार्यक्रम, आर्थिक सहायता संरचनात्मक परिवर्तन, कौशल विकास योजना आदि।

संबंधों और सहयोग की बढ़ावट:
दिव्यांगजनों को समाज से समर्थन और सहायता की आवश्यकता होती है। इसके लिए गैर सामाजिक संगठनों और समूहों को बढ़ावा देना चाहिए जो इस उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद कर सकें। यह सुनिश्चित करना होगा कि हम समाज में हर व्यक्ति को समान अवसर और समर्थन प्रदान करते हैं, ताकि हर कोई अपनी सक्षमताओं को सशक्त कर समाज में सक्रिय भूमिका निभा सके।

क्रियाशीलता और सोशल इनक्लूजन: दिव्यांग व्यक्तियों के समावेशन से कार्यस्थल में क्रियाशीलता बढ़ती है। उनके विचार और दृष्टिकोण से सोचने के नए तरीके आते हैं, जिससे नवाचार और उत्कृष्टता का संचार होता है। साथ ही, समावेशन से सामाजिक और आर्थिक इनक्लूजन बढ़ती है और समृद्धि का मार्ग खुलता है।

संबंधों का मजबूतीकरण: सबके समावेशन से संबंधों का मजबूत होना शुरू होता है। दिव्यांगजनों के साथ काम करने का अनुभव, समर्थन और सहयोग करने में सभी को अधिक सक्षम बनाता है। यह संबंध और टीमवर्क में मजबूती और सहयोग को बढ़ावा देता है।

चुनौतियाँ:

• सामाजिक स्टिग्मा और असमानता: सामाजिक स्टिग्मा और दिव्यांगों के साथ असमानता कार्यालय में समावेशन को बाधित कर सकती है। सामाजिक मान्यताओं, धार्मिक तत्त्वों और समाज की अन्य संरचनाओं के कारण, दिव्यांगता को कई बार एक असमान स्थिति में डाला जा सकता है। दिव्यांगता से जुड़े मिथकों, भ्रांतियों और गलत धारणाओं की वजह से लोग अलग मानसिकता और व्यावहारिक प्रतिक्रियाएं दिखा सकते हैं।

• संसाधनों की कमी: संसाधनों की कमी और तकनीकी सुधार के अभाव में दिव्यांग लोगों का समावेशन कठिन हो सकता है क्योंकि उन्हें विभिन्न सामाजिक, व्यक्तिगत और पेशेवर स्तर पर उचित संसाधनों तक की पहुंच नहीं होती है।

समावेशन का मतलब है कि दिव्यांग व्यक्ति भी समूचे समाज के अंतर्गत समाहित हों और उन्हें

समाज में समानता का अधिकार प्राप्त हो। लेकिन बार-बार यह देखा गया है कि समावेशन की प्रक्रिया में दिव्यांग व्यक्तियों के पास उचित संसाधनों की कमी होती है। संसाधनों की कमी अक्सर उन्हें उनकी आवश्यकताओं और क्षमताओं को पूरा करने में बाधा डालती है। वे अक्सर सुविधाओं, उपकरणों और सहायता से वंचित रहते हैं जो उन्हें अपने कार्यों को पूरा करने में सहायता कर सकते हैं। इससे उन्हें अपनी क्षमताओं का पूरा प्रयोग करने में मुश्किलें आती हैं और वे समाज में अपना अधिकारपूर्ण स्थान नहीं बना पाते।

कार्यालयी परियोजनाओं में दिव्यांगजनों का समावेशन करते समय वे अक्सर योजनाओं, सुविधाओं और अन्य संसाधनों के लिए लड़ रहे होते हैं। समाज में इस वर्ग को समाविष्ट करने के लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो उन्हें उनकी आवश्यकताओं के अनुसार समर्थन प्रदान कर सके।

• व्यक्तिगत सहायता की आवश्यकता: कुछ दिव्यांग व्यक्तियों को व्यक्तिगत सहायता की आवश्यकता होती है जो कार्यालय में समावेशन को और अधिक मुश्किल बना सकती है क्योंकि कार्यालयी स्थलों पर उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सुविधा प्रदान करने में कई प्रकार की बाधाएँ हो सकती है, जैसे - एक्सेसबिलिटी की कमी, तकनीकी साधनों की कमी, संगठनीय समर्थन की कमी, सामाजिक स्टिग्मा, अज्ञानता और जागरूकता की कमी आदि।

समाधान:

• संवेदनशीलता और जागरूकता: संगठनों में दिव्यांगता के समावेशन के लिए संवेदनशीलता बढ़ानी चाहिए और जागरूकता फैलानी चाहिए। "संवेदनशीलता और जागरूकता" एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जो दिव्यांग व्यक्तियों के समावेशन में सहायक हो सकता है। कुछ तरीके हैं जिनसे संवेदनशीलता और जागरूकता को बढ़ावा दिया जा सकता है जैसे - शिक्षा और संगठनात्मक संसाधनों का संवितरण, सामाजिक संबंधों में बदलाव, संगठनों में नीतियों और प्रक्रियाओं का सुधार, जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान, सहयोगी अभियान और प्रोत्साहन आदि।

संवेदनशीलता और जागरूकता के माध्यम से समाज में दिव्यांगता के प्रति समर्थन को बढ़ाया जा सकता है और उन्हें समावेशित बनाने में मदद की जा सकती है। यह समाज में संजीवनी की भूमिका निभाता है जो सभी को समानता और समावेशितता की दिशा में अग्रसर कर सकता है।

• समृद्धि की दिशा में कदम: संगठनों को दिव्यांग व्यक्तियों को समावेशित करने के लिए नीतियों और कार्यप्रणालियों में परिवर्तन करना चाहिए। जागरूकता, सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन और उचित संसाधनों का प्रयोग करके हम एक समर्थ समाज बना सकते हैं जो हर व्यक्ति को समावेशित महसूस करने में मदद करता है। यह समावेशन न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि व्यापारिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर भी आवश्यक है। दिव्यांग व्यक्तियों के समावेशन से

कार्यालयी परियोजनाओं में नवाचार, सृजनात्मकता, सहयोग और समृद्धि का वातावरण बनता है। इससे समृद्ध समाज का निर्माण होता है जो सभी को समान अवसर और समर्थन प्रदान करता है।

दिव्यांग व्यक्तियों को समाज में उनकी क्षमताओं और योग्यताओं का सम्मान मिलना चाहिए। समाज में समर्थन, समझौता और संवेदनशीलता के माध्यम से हम एक सामंजस्यपूर्ण और समर्थनशील संसार बना सकते हैं जो हर व्यक्ति को समान अधिकारों और सुविधाओं का लाभ देगा। इससे हम समृद्धि, समानता और समावेशन की दिशा में कई नई संभावनाओं का सृजन कर सकते हैं जो हमारे समाज को और भी मजबूत बनाता है।

गांधीजी के विचारों में समाज में समावेशन और सर्वोदय की अवधारणा बहुत महत्त्वपूर्ण थी। उन्होंने समाज में समावेशन के लिए सत्याग्रह, अहिंसा और समरसता को सर्वोपरि माना था।

गांधीजी ने भी समाज को समावेशी बनाने के लिए कहा है, "व्यक्ति को समाज में वह स्थान देना चाहिए जिसके लिए वह योग्य हो।" उन्होंने समाज में समानता के लिए लड़ाई की और समाज के हर वर्ग के व्यक्तिगत अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया।

गांधीजी के विचारों में सर्वोदय की अवधारणा भी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। उन्होंने कहा था, "सर्वोदय ना केवल अपने लिए, बल्कि समस्त समाज के लिए है।" उनका उद्धरण जैसे "असली सेवा उस समय होती है जब हम किसी की मदद करते हैं जो हमें कुछ नहीं दे सकता", हमें जीवन जीने और भारत को बेहतर बनने के उद्देश्य को परिपूर्ण करता है। उन्होंने समाज के सबसे कमजोर और असमर्थ व्यक्तियों के प्रति विशेष संवेदनशीलता और समर्थन की मांग की थी ताकि समाज का हर व्यक्ति समृद्धि का हिस्सा बन सके।

गांधीजी के विचार और सिद्धांतों के साथ जुड़े इन उद्धरणों के माध्यम से हम समाज में समावेशिता की महत्ता को समझ सकते हैं और सर्वोदय की दृष्टि से हर व्यक्ति के समृद्धि में सहायता करने का संकल्प ले सकते हैं।

समावेशित न किए जाने वाले व्यक्ति या समूहों की क्षमताओं को नजरअंदाज करना, समाज को उनकी अनदेखी के कारण उनके संघर्षों से वंचित कर देता है। हमें समाज में एक ऐसी विचारधारा को प्रोत्साहित करना चाहिए जो हर व्यक्ति को समानता के मान्यताओं में शामिल करती है चाहे वह उन्हें न्याय, समर्थन या सामाजिक सम्मान में मिले। हम जो अनजाने में अधिकतम जगहों पर एवं कार्यालयों या परियोजनाओं में दिव्यांगजनों को गलती से भूल जाते है एवं वे न चाहते हुए भी नजरंदाज़ हो जाते हैं, इसके लिए हमें भी संकल्पित होकर अपनी इस भूल को स्वीकार करके सुधारने की ओर कदम बढ़ाने चाहिए। इसी सन्दर्भ में समाज के समावेशी विकास को लेकर एल्मा रोउसेवेल्ट का ये विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है: "इतिहास बताता है कि किसी समाज की साथीता उसके सबसे कमजोर सदस्य की सामर्थ्य में होती है।"

आखिरी शब्द में, हमें दिव्यांगता को न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि समाज के सभी पहलुओं में समझना चाहिए। समाज को संवेदनशील और समर्थनशील बनाने के लिए हमें सभी को समानता, सम्मान और समावेशन का हक देने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। इससे हम एक समृद्ध और समर्थ समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं जो हर व्यक्ति को समान अधिकारों और सुविधाओं का लाभ देता है।

"समाज हर वर्ग को मिलाकर बना है एवं सबके समावेशन से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है!"

कविता

स्वार्थ

सुश्री विधि उज्जैनियाँ
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

ना जाने दुनिया को क्या हो गया है,
हर कोई अपने ही स्वार्थ में खो गया है।
ना परवाह रिश्तों की ना परवाह दोस्ती की,
बस अपनी ही धुन में मदमस्त हो गया है।
बना के स्वार्थ को ही अपनी जिन्दगी का लक्ष्य,
बस ऐसे जीवन जीने का आदी हो गया है।
दिखाकर सोशल-मीडिया पर अपना नकली चेहरा,
असली चेहरे के साथ जीवन में ख़ुदग़र्ज़ हो गया है।
अपने ही स्वार्थ को दोस्ती और रिश्तों में बदलकर,
उन्हें एक पल में तोड़ने का मज़ाक़ बन गया है।
जी ले अपनी ज़िन्दगी ख़ुदा ने दी है एक,
अपने लिए तो जी लिया कभी दूसरों के लिए भी जी के देख
छोड़ अपने स्वार्थ को कब तक बुरा बनेगा,
परोपकार करके तो देख ख़ुदा का दूत बनेगा।
स्वार्थी कब तक सोचेगा अपने ही बारे में,
दूसरों के लिए सोच के तो देख अच्छा लगेगा।

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय
महालेखाकार का कार्यालय परिसर, सैफाबाद
हैदराबाद - 500004